सितार वादन पर लाइव पेंटिंग का प्रयोग

देशभर के 25 शहरों के 60 कलाकार आए कार्यशाला में

सिटी रिपोर्टर • सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में मंगलवार को अध्यात्म पर आधारित चित्रकारी कार्यशाला 'रंगायन' का शुभारंभ हुआ। यहां अलग-अलग राज्यों, मान्यताओं, धर्मों और विश्वास वाले कलाकार अध्यात्म को आधार बनाकर कूची के रंग बिखेर रहे थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि और मशहूर चित्रकार सचिदा नागदेव ने कहा, कि पेंटिंग में अध्यात्म अपने आप जुड़ जाता है। कार्यशाला में देशभर के 25 शहरों से 60 कलाकार शामिल हुए हैं। कार्यक्रम में सितार वादक स्मिता नागदेव के सितार वादन पर पेंटिंग बनाने का जीवंत प्रयोग भी किया गया। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के सहायक प्राध्यापक सुनील विश्वकर्मा और इग्नू के सहायक प्राध्यापक लक्ष्मण प्रसाद ने सितार, सरस्वती और बुद्ध की पेंटिंग बनाई। कार्यशाला में आगे भी कलाकार चेतन और अवचेतन, प्रकृति और परमात्मा, स्वयं की उत्पत्ति और इच्छा के प्रभाव जैसे विषयों को उकेरेंगे।

Central Chronicle Wednesday, February 15, 2017

Vedic tradition should be conserved and popularized: Prof Bhatt

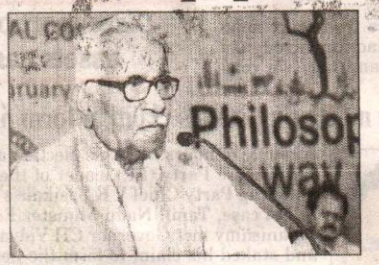

Staff Reporter, Bhopal

The three-day 91st Indian Philosophy Congress at the Sanchi University concluded on Tuesday. Asian Philosophy Congress chairman Prof. SR Bhatt stressed the need to conserve and popularize the Vedic tradition of Indian philosophy.

Asian Philosophy Congress general secretary Prof. Balganpati said the departments of philosophy in Indian universities are shutting down. He stressed the need to rekindle interest for philosophy among youths.

Sanchi University vice chancellor Prof. Yagyeshwar Shastri the three-day function was academically historic. Deccan College Pune's chancellor Prof. Jamkhedkar said all the social science subjects and philosophy should come on one platform.

FREE PRESS Wednesday / Bhopal February 15, 2017

Youngsters urged to preserve tradition of Vedic philosophy

Conference at Sanchi varsity on Asian philosophies concludes

• OUR STAFF REPORTER
BHOPAL

The 91st Indian Philosophy Congress concluded at Sanchi University for Buddhist-Indic Studies on Tuesday. Asian Philosophy Congress, chairman, Prof SR Bhatt in his address urged the young generation to emphasise on research and take new philosophical thoughts forward.

He stressed on conserving Vedic traditions of Indian philosophy and also to do its publicity and expansion.

General secretary Prof Balganpati said there is a need to work in the field of philosophy considering the demands of society. The university's vice chancellor Prof Yageshwar Shastri termed the programme as historic and unprecedented.

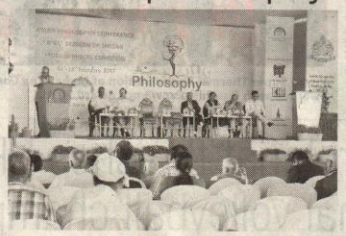

Asian Philosophy Conference conclude at Sanchi University of Buddhist-Indic Studies on Tuesday

Key speaker during concluding session, Deccan College, Pune, chancellor, Prof Jamkhedkar said all social sciences should come on one platform. He also spoke on spread of Vaishnav religion.

नव भारत भोपाल, बुधवार, 15 फरवरी, 2017

वैदिक परंपरा को संरक्षित करने की जरूरत : भट्ट

91वीं इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस का समापन

भोपाल, 14 फरवरी, नभास. सांची विश्वविद्यालय में चल रही तीन दिवसीय कार्यक्रम 91वीं इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस का मंगलवार को समापन हो गया.

कार्यक्रम में एशियाई दर्शन कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस आर भट्ट ने दर्शन को नए विचार और कारण की जरूरत बताते हुए नई पीढ़ी से शोध को आगे बढ़ाने की अपील की एवं भारतीय दर्शन की वैदिक परंपरा को संरक्षित, प्रचारित और फैलाने की जरूरत पर जोर दिया.

एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के महासचिव प्रो. बालगणपति ने कहा कि भारत के विश्वविद्यालयों में दर्शन विभाग बंद हो रहे हैं और ऐसे में जरूरत है कि समाज दर्शन

दर्शन की दिशा में कार्य करने की जरूरत पर जोर

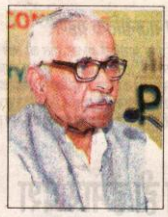

को जरूरत के मुताबिक कार्य हो. उन्होंने युवाओं में दर्शन के प्रति लगाव बढ़ाने की दिशा में काम करने पर जोर दिया.

इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के महासचिव प्रो. पनीरसेल्वम ने कहा कि इस कांग्रेस में पिछले 5 साल से दो धड़ों में बंटी इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस फिर से एकसाथ आई है और ये भारत में दर्शन के लिए अच्छा कदम है.

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के चिंतकों का जमावड़ा

कार्यक्रम में तकनीकी सत्रों में तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, तर्कशास्त्र और वैज्ञानिक विधि, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 32 शोध-पत्र पढ़े गए. कांग्रेस के दौरान करीब 193 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए. एशियाई फिलोसॉफिकल कांग्रेस में 12 देशों के दर्शनशास्त्रियों समेत देशभर के दार्शनिक, चिंतक एवं विचारक एकसाथ जुटे.

सामाजिक विज्ञान एक साथ आएं : प्रो. जमखेडकर

सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने समारोह में पधारे सभी अतिथियों द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों एवं विचार मंथन को अभूतपूर्व बताते हुए समारोह को अकादमिक रूप से ऐतिहासिक करार दिया. समापन समारोह में मुख्य वक्तव्य देते हुए डेक्कन कॉलिज पुणे के चांसलर प्रो. जमखेडकर ने दर्शन समेत सभी सामाजिक विज्ञान को एक साथ आने की जरूरत बताई. उन्होंने सांची विवि से भविष्य में एक सम्मेलन कर सभी सामाजिक विज्ञानों की मूलभूत चीजों पर विस्तृत विचार करने का आग्रह किया.

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, बुधवार, 15 फरवरी 2017

युवाओं को बताया जाए दर्शनशास्त्र का महत्व

दर्शन को प्रासंगिक बनाने के लिए समाज से जोड़ने की आवश्यकता

रायसेन, 14 फरवरी। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में तीन दिन से जारी 91वीं इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस का समापन हो गया। इस मौके पर एशियाई दर्शन कांग्रेस के चेयरमैन प्रो एस.आर भट्ट ने दर्शन को नए विचार और कारण की जरुरत बताते हुए नई पीढ़ी से शोध को आगे बढ़ाने की अपील की।

उन्होने भारतीय दर्शन की वैदिक परंपरा को संरक्षित करने, प्रचार और फैलाने की ज़रुरत पर ज़ोर दिया। एशियाई फिलोसॉफीकांग्रेस के महासचिव प्रो बाल गणपति ने कहा कि भारत के विश्वविद्यालयों में दर्शन विभाग बंद हो रहे है और ऐसे में ज़रुरत है कि समाज की दर्शन की जरुरत के मुताबिक कार्य हो। उन्होने युवाओं में दर्शन के प्रति लगाव बढ़ाने की दिशा में काम करने पर जोर दिया। इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के महासचिव प्रो पनीरसेल्वम ने कहा कि इस कांग्रेस में पिछले 5 साल से दो धड़ों में बंटी इंडियन फ्लिोसॉफी कांग्रेस फिर से एकसाथ आई है और ये भारत में दर्शन के लिए अच्छा कदम है। उन्होने कांग्रेस के दौरान 11 इंडोमेंट लेक्चर और 3 सिंपोसियम में हुए विषय प्रवर्तन को अभूतपूर्व बताया। सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने समारोह में पधारे सभी अतिथियों द्वारा प्रस्तुत शोध.पत्रों एवं विचार मंथन को अभूतपूर्व बताते हुए समारोह को अकादमिक रुप से ऐतिहासिक करार दिया। समापन समारोह में मुख्य वक्तव्य देते हुए डेक्कन कॉलिज पुणे के चांसलर प्रो जमखेडकर ने दर्शन समेत सभी सामाजिक विज्ञान को एक साथ आने की जरुरत बताई।

16 नवदुनिया भोपाल, बुधवार 15 फरवरी 2017

युवाओं में दर्शन के प्रति पैदा करना होगा लगाव

भोपाल

भारत के विश्वविद्यालयों में दर्शन विभाग बंद हो रहे हैं। युवाओं में दर्शन के प्रति लगाव बढ़ाने की दिशा में काम करने की जरूरत है। समाज में दर्शन की जरूरत के मुताबिक काम किए जाने की आवश्यकता है। इससे दर्शन शास्त्र को जीवित रखा जा सकता है।

यह विचार सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में तीन दिन से जारी 91वीं इंडियन फिलॉसफी कांग्रेस के समापन अवसर पर विशेषज्ञों ने व्यक्त किए। प्रोफेसर पनीरसेल्वम ने कहा कि दयाकृष्ण चिंतन के दो भाग हैं। एक वो जिसमें वह भारतीय दर्शन की पूर्व मान्यताएं जैसे आध्यात्मिकता को चुनौती देते हैं दूसरा वह जिसमें वह वेद के प्रमाण होने का भी खंडन करते हुए भारतीय दर्शन को धर्म या परलोक शास्त्र से हटाकन दर्शन के रूप में स्थापित करते हैं। प्रोफेसर बालगणपति ने कहा कि दर्शन के प्रति सचि जगाना जरूरी है। विश्वविद्यालयों में दर्शन पर शोध कार्य होने चाहिए, लेकिन दर्शन विभाग बंद होने से ऐसा हो नहीं पा रहा है, जो चिंता का विषय है। इसी के साथ सेमिनार का सममापन हो गया।

सांची विश्वविद्यालय में आयोजित कान्फ्रेंस के समापन पर विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किए।

पिछड़े लोगों की मदद से ही होगा भला: अध्यात्मानंद

■ 91वीं इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के दूसरे दिन कई अहम विषयों पर चर्चा

सांची/रायसेन, देशबन्धु। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस के दूसरे दिन सामाजिक रुप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोसियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए। शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने कहा कि घावों की हीलिंग और समाज द्वारा पिछड़े लोगों की मदद और एकीकरण से ही लोगों का भला होगा।

उन्होंने खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता गिनाई जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सकें। उन्होंने अनिवार्य निशुल्क शिक्षा को समाधान बताया। प्रो नितिन व्यास ने कहा कि सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी। प्रो बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई। श्रीलंका से आए प्रो दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रुप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता बढ़ाने में मदद मिली है।

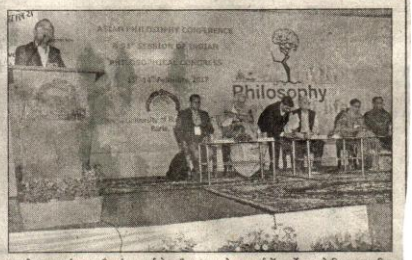

इस मौके पर प्रो श्याम गोस्वामी ने कहा कि हमने जाति और वर्ण को मिला दिया है। वर्ण जहां संस्कार आधारित स्वधर्म है वहीं जाति बुद्धि का भ्रमण है जिसे हमने जन्म आधारित कर दिया। उन्होंने कहा कि शास्त्र में हिंदू का कहीं जिक्र नहीं है। वल्लभाचार्य जैसे विद्वानों ने कहा है कि ब्राह्मण कोई जाति नहीं थी। उन्होंने समाज द्वारा जाति के बंधन तोड़ने का आव्हान किया। एंडोमेंट लेक्चर सीरीज में कनाडा से आए कल्पेश भट्ट ने स्वामीनारायण संप्रदाय और शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के बीच अंतर की बात की। मंजुलिका घोष ने धार्मिक बहुलतावाद में भाषा, प्रतीक, देव, अभिव्यक्ति, मुक्ति के स्वरुप और साधनों में विविधिता बताई। उन्होंने कहा कि बोधिसत्व का आदर्श सभी को शामिल करता है।

प्रो अमरनाथ झा ने कहा कि समाज का स्वरुप इससे तय होता है कि धर्म का स्वरुप प्रेम और समर्पण पर आधारित है या घृणा और हिंसा पर। उन्होंने गांधीजी को उद्धृत करते हुए कहा कि बापू ने धर्म को जीवनशैली मानते हुए कहा कि सर्व धर्म समभाव में सभी मूल्य विद्यमान है। वल्लभाचार्य वेदांत व्याख्यान में वल्लभ वेदांत के संदर्भ में आत्मानुभूति पर बोलते हुए प्रो श्याम मनोहर गोस्वामी ने कहा कि विद्या के जरिये अमृत प्राप्त करने का दृष्टांत हमारे ग्रंथों में है। उन्होंने कहा कि मांडूक्योपनिषद में चेतना की अवस्थाएं समझाई गई है और आत्मानुभूति प्रत्यक्ष के साथ परोक्ष रुप में भी हो सकती है। भारतीय दर्शन के इतिहास को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में लिखने पर भी इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस में सहमति बनी। इस मामले पर चर्चा में पुनर्लेखन को विषय आधारित या समस्या आधारित करने, मूल ग्रंथों को आधार बनाने और तकनीक का अधिकधिक उपयोग करने के सुझाव आए। कई विचारकों ने पुनर्लेखन में भारतीय पक्ष को आधार बनाने का विचार दिया।

लेक्चर सीरीज के बाद हुए तकनीकी सत्र में पांच अलग-अलग विषयों यथा: दर्शन का इतिहास, तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन, अध्यात्म एवं विज्ञान एवं धर्म पर 34 शोध-पत्र पढ़े गए। दिन के अंतिम सत्र में इच्छामृत्यु विषय पर सिंपोसियम में विचारकों एवं चिंतकों ने अपने विचार व्यक्त किए। 14 फरवरी को इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की वैठक में इंडोमेंड लेक्चर सीरीज में सांस्कृतिक एवं धार्मिक समझ पर प्रो. गणेश प्रसाद दास लेक्चर होगा। इसी कड़ी में दया कृष्ण मेमोरियल लेक्चर एवं के एस मूर्ति मेमोरियल लेक्चर भी होगा। तकनीकी सत्रों में तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 32 शोध-पत्र पढ़े जाएंगे। इसी दिन 2:30 बजे से समापन सत्र का आयोजन होगा।

सामाजिक समरसता के लिए शिक्षा और आपसी सामंजस्य बहुत जरूरी

91वीं इंडियन फिलॉसफी कांग्रेस के दूसरे दिन कई अहम विषयों पर हुई चर्चा

EVENT IN CITY

सिटी रिपोर्टर • सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस के दूसरे दिन सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोजियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए। शिवानंद आश्रम अहमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने बताया कि घावों की हीलिंग और समाज द्वारा पिछड़े लोगों की मदद और एकीकरण से ही लोगों का भला होगा। उन्होने खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता गिनाई जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सकें। प्रो. नितिन व्यास ने बताया कि सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी। श्रीलंका से आए प्रो. दया इदिरिसिंघे ने बताया कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रूप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता है। इस मौके पर प्रो. श्याम गोस्वामी ने कहा कि हमने जाति और वर्ण को मिला दिया है। वर्ण जहां संस्कार आधारित स्वधर्म है वहीं जाति बुद्धि का भ्रमण है जिसे हमने जन्म आधारित कर दिया। शास्त्र में हिंदू का कहीं जिक्र नहीं है। वल्लभाचार्य जैसे विद्वानों ने कहा है कि ब्राह्मण कोई जाति नहीं थी। उन्होंने समाज द्वारा जाति के बंधन तोड़ने का आव्हान किया। एंडोमेंट लेक्चर सीरीज में कनाडा से आए कल्पेश भट्ट ने स्वामीनारायण संप्रदाय और शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के बीच अंतर की बात की। लेक्चर सीरीज के बाद हुए तकनीकी सत्र में पांच अलग-अलग विषयों यथा: दर्शन का इतिहास, तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन, अध्यात्म एवं विज्ञान एवं धर्म पर 34 शोध-पत्र पढ़े गए।

Bring backward people to mainstream for welfare of all: Swami Adhyatmanand

• OUR STAFF REPORTER
BHOPAL

In the ongoing 91st Bharati Darshan Congress at Sanchi University for Buddhist-Indic Studies on Monday, a symposium on affirmative action in the uplift of socially backward people was organized.

Swami Adhyatmanand from Shivanand Ashram, Ahmedabad, said people's welfare is possible by extending helping hand to backward people and by social integration. He stressed on free and compulsory education as a tool to promote social integration. Professor Nitin Vyas said positive social change would set up justice.

Professor Daya Idirisinghe from Sri Lanka, said social harmony in Sri Lanka is the outcome of equal treatment given to Sinhalese and Tamil languages. Professor Shyam Goswami and Prof BP Sharma also spoke on the occasion.

Sanchi University for Buddhist and Indic Studies holds Asian Philosophical conference on Monday.

समाज को खाई पाटने वाले दार्शनिकों की जरूरत

सांची विवि में दर्शन कॉन्फ्रेंस में विशेषज्ञों ने रखे अपने विचार

भोपाल

समाज को खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता है, जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सकें। समाज के पिछड़े लोगों की मदद व एकीकरण से ही लोगों का भला होगा। यही दर्शन का मकसद है। यह विचार सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस के दूसरे दिन विशेषज्ञों ने व्यक्त किए। शिवानंद आश्रम अहमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने कहा कि सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी। प्रोफेसर बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई है, क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई है।

श्रीलंका से आए प्रो.दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली और तमिल भाषाओं को समान रूप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता बढ़ी है। उन्होंने कहा कि शास्त्रों में हिन्दू का कहीं जिक्र नहीं है। वल्लभाचार्य जैसे विद्वानों ने कहा है कि ब्राह्मण कोई जाति नहीं थी। उन्होंने समाज द्वारा जाति के बंधन तोड़ने का आव्हान किया।

सकारात्मक बदलाव से ही न्याय संभव : व्यास

भोपाल,13 फरवरी, नभासं. सांची विश्वविद्यालय में चल रही 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस के दूसरे दिन सोमवार को सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोजियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए.

91वीं भारती दर्शन कांग्रेस

शिवानंद आश्रम अहमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने कहा कि घावों की हीलिंग और समाज द्वारा पिछड़े लोगों की मदद और एकीकरण से ही होगा. उन्होंने खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता गिनाई जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सकें. प्रो. नितिन व्यास ने कहा कि सकारात्मक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी. प्रो. बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई है क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई.

नौकरी के आवेदन में जाति का उल्लेख जरूरी नहीं : दया

श्रीलंका से आए प्रो. दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है. सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रुप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता है .उन्होंने कहा कि उनके देश में जाति का उल्लेख किसी भी नौकरी के आवेदन में आवश्यक नहीं है और इससे समरसता बढ़ाने में मदद मिली है.

भोजपाल
स्वदेश भोपाल, 14 फरवरी 2017 . 12

चयन समिति गठित

राज्य शासन ने मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के महानिदेशक पद पर चयन के लिये समिति गठित की है। मुख्य सचिव समिति के अध्यक्ष होंगे। कुलपति राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय समिति के सदस्य होंगे।

चर्चा } 91वी इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस में अहम विषयों पर चर्चा, दर्शन पुनर्लेखन पर बनी सहमति

सामाजिक समरसता हेतु शिक्षा और आपसी सामंजस्य अहम

« स्वदेश संवाददाता। भोपाल

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में जारी 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस के दूसरे दिन सामाजिक रुप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोसियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए। शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने कहा कि घावों की हीलिंग और समाज द्वारा पिछड़े लोगों की मदद और एकीकरण से ही लोगों का भला होगा। उन्होंने खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता गिनाई जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सके। उन्होंने अनिवार्य निशुल्क शिक्षा को समाधान बताया। प्रो नितिन व्यास ने कहा कि सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी। प्रो बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई। श्रीलंका से आए प्रो दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रुप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता है। उन्होने कहा कि उनके देश में जाति का उल्लेख किसी भी नौकरी के आवेदन में आवश्यक नहीं है और इससे समरसता बढ़ाने में मदद मिली है। इस मौके पर प्रो श्याम गोस्वामी ने कहा कि हमने जाति और वर्ण को मिला दिया है। वर्ण जहां संस्कार आधारित स्वधर्म है वहीं जाति बुद्धि का भ्रमण है जिसे हमने जन्म आधारित कर दिया। उन्होने कहा कि शास्त्र में हिंदू का कहीं जिक्र नहीं है। वल्लभाचार्य जैसे विद्वानों ने कहा है कि ब्राह्मण कोई जाति नहीं थी। उन्होने समाज द्वारा जाति के बंधन तोड़ने का आव्हान किया।

धर्म का स्वरूप प्रेम पर आधारित

एंडोमेंट लेक्चर सीरीज् में कनाडा से आए कल्पेश भट्ट ने स्वामीनारायण संप्रदाय और शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के बीच अंतर की बात की। मंजुलिका घोष ने धार्मिक बहुलतावाद में भाषा, प्रतीक, देव, अभिव्यक्ति, मुक्ति के स्वरुप और साधनों में विविधिता बताई। उन्होने कहा कि बोधिसत्व का आदर्श सभी को शामिल करता है। प्रो अमरनाथ झा ने कहा कि समाज का स्वरुप इससे तय होता है कि धर्म का स्वरुप प्रेम और समर्पण पर आधारित है या घृणा और हिंसा पर। उन्होने गांधीजी को उद्धृत करते हुए कहा कि बापू ने धर्म को जीवनशैली मानते हुए कहा कि सर्व-धर्म समभाव में सभी मूल्य विद्यमान है। वल्लभाचार्य वेदांत व्याख्यान में वल्लभ वेदांत के संदर्भ में आत्मानुभूति पर बोलते हुए प्रो श्याम मनोहर गोस्वामी ने कहा कि विद्या के जरिये अमृत प्राप्त करने का दृष्टांत हमारे ग्रंथों में है। उन्होने कहा कि मांडूकोपनिषद में चेतना की अवस्थाएं समझाई गई है और आत्मानुभूति प्रत्यक्ष के साथ परोक्ष रुप में भी हो सकती है।

मूल गंथ बनेंगे आधार

भारतीय दर्शन के इतिहास को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में लिखने पर भी इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस में सहमति बनी। इस मामले पर चर्चा में पुनर्लेखन को विषय आधारित या समस्या आधारित करने, मूल ग्रंथों को आधार बनाने और तकनीक का अधिकाधिक उपयोग करने के सुझाव आए।

कई विचारकों ने पुनर्लेखन में भारतीय पक्ष को आधार बनाने का विचार दिया। लेक्चर सीरीज के बाद हुए तकनीकी सत्र में पांच अलग-अलग विषयों यथा-दर्शन का इतिहास, तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन, अध्यात्म एवं विज्ञान एवं धर्म पर 34 शोध-पत्र पढ़े गए। दिन के अंतिम सत्र में इच्छामृत्यु विषय पर सिंपोसियम में विचारकों एवं चिंतको ने अपने विचार व्यक्त किए। 14 फरवरी को इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की बैठक में इंडोमेंड लेक्चर सीरीज में सांस्कृतिक एवं धार्मिक समझ पर प्रो गणेश प्रसाद दास लेक्चर होगा। इसी कड़ी में दया कृष्ण मेमोरियल लेक्चर एवं के एस मूर्ति मेमोरियल लेक्चर भी होगा। तकनीकी सत्रों में तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 32 शोध-पत्र पढ़े जाएंगे। इसी दिन 2.30 बजे से समापन सत्र का आयोजन होगा।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, मंगलवार, 14 फरवरी 2017

91वीं इंडियन फिलॉसफी कांग्रेस के दूसरे दिन कई अहम विषयों पर चर्चा

सामाजिक समरसता हेतु शिक्षा और आपसी सामंजस्य अहम, दर्शन पुनर्लेखन पर बनी सहमति

निज संवाददाता

रायसेन, 13 फरवरी। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आयोजित 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस के दूसरे दिन सामाजिक रुप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोसियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए।

शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी ने कहा कि घावों की हीलिंग और समाज द्वारा पिछड़े लोगों की मदद, और एकीकरण से ही लोगों का भला होगा। उन्होंने खाई पाटने वाले ऐसे दार्शनिकों की आवश्यकता गिनाई जो समाज में एकीकरण को बढ़ा सके। उन्होने अनिवार्य निशुल्क शिक्षा को समाधान बताया।

प्रो नितिन व्यास ने कहा कि सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन से न्याय की स्थापना होगी। प्रो बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई। श्रीलंका से आए प्रो दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रुप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता है। उन्होंने कहा कि उनके देश में जाति का उल्लेख किसी भी नौकरी के आवेदन में आवश्यक नहीं है और इससे समरसता बढ़ाने में मदद मिली है।

लेक्चर सीरीज के बाद हुए तकनीकी सत्र में पांच अलग-अलग विषयों यथा- दर्शन का इतिहास, तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन, अध्यात्म एवं विज्ञान एवं धर्म पर 34 शोध-पत्र पढ़े गए। दिन के अंतिम सत्र में इच्छामृत्यु विषय पर सिंपोसियम में विचारकों एवं चिंतको ने अपने विचार व्यक्त किए।

14 फरवरी को इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की बैठक में इंडोमेंड लेक्चर सीरीज में सांस्कृतिक एवं धार्मिक समझ पर प्रो गणेश प्रसाद दास लेक्चर होगा। इसी कड़ी में दया कृष्ण मेमोरियल लेक्चर एवं के एस मूर्ति मेमोरियल लेक्चर भी होगा। तकनीकी सत्रों में तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 32 शोध-पत्र पढ़े जाएंगे।

बदलते जमाने का अखबार
पीपुल्स समाचार भोपाल, मंगलवार 14 फरवरी, 2017

श्रीलंका में शिक्षा फ्री है: इदिरिसिंघे

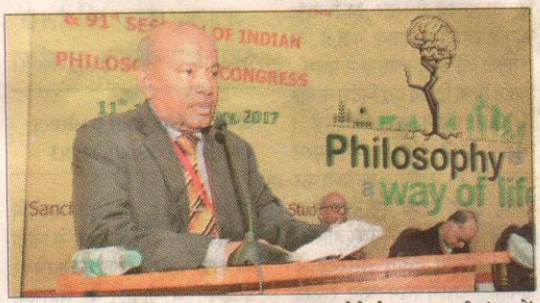

सांची विवि में आयोजित भारती दर्शन कांग्रेस का दूसरा दिन

यंग रिपोर्टर • भोपाल
editor@peoplessamachar.co.in

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में जारी 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस के दूसरे दिन सोमवार को सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान में अफर्मेटिव एक्शन पर सिंपोसियम में कई रचनात्मक विचार सामने आए।

प्रो. बीपी शर्मा ने कहा कि उपनिषद् की शिक्षा शाब्दिक बनकर रह गई, क्योंकि जाति व्यवस्था जन्म आधारित व्यवस्था बन गई। श्रीलंका से आए प्रो. दया इदिरिसिंघे ने कहा कि उनके देश में शिक्षा मुफ्त है और सरकार द्वारा ही दी जाती है। सिंघली एवं तमिल भाषाओं को समान रूप से बढ़ावा देने के कारण श्रीलंका में सामाजिक समरसता है। उन्होंने कहा कि उनके देश में जाति का उल्लेख किसी भी नौकरी के आवेदन में आवश्यक नहीं है और इससे समरसता बढ़ाने में मदद मिली है।

Central Chronicle February 14, 2017

Help weaker sections to build more just society

Staff Reporter, Bhopal

On the second day of the 91st Indian Philosophical Congress at the Sanchi University of Buddhist-Indic Studies on Monday, a symposium on 'Affirmative action for upliftment of socially backward people' was organised.

Swami Adhyatmanandji of Shivanand Ashram stressed the need to help the socially and economically backward sections of the society and bridge the gap between the rich and the poor. He said compulsory free education would play a crucial role in this regard.

Prof. Nitin Vyas said positive social change would help in building a more just society. Prof. Daya Indirsinghe from Srilanka said free education is provided in his country by the government.

There is social harmony in Srilanka as Singhali and Tamil languages are equally promoted. He said mention of caste is not required for any job. Prof. Shyam Goswami said there is no mention of Hindu in Shastras. Scholars like Vallabhacharya have said there is no Brahmin caste, he added. Goswami urged the people to rise above caste and other considerations that create rift and division in the society.

हरिभूमि भोपाल, सोमवार 13 फरवरी 2017 03

आयोजन | सांची विश्वविद्यालय में 91वीं इंडियन फिलोसफी कांग्रेस हुई शुरु, स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो. रामजी सिंह ने किया शुभारंभ

विश्व को भारत से उम्मीद, वैश्विक दर्शन विकसित करने की जरूरत

हरिभूमि न्यूज . भोपाल

रविवार को सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो. रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो. सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें। क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होंने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ

श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो रहे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो. डी. एन. द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है। ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है, लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए, क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है।

सभी मनुष्य जाति एक परिवार

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि सभी मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है, जिसे विद्वान अलग-अलग ढंग से वर्णित करते हैं। बौद्धिक संकल्पनाओं के विश्लेषण के उलट उन्होंने दर्शन का व्यावहारिक प्रयोजन मानव दुखों का निवारण बताया। प्रो. शास्त्री ने कहा कि सच्चे दार्शनिक लोगों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश और दुख से मुक्ति की कोशिश करते हैं। विशेष वक्तव्य देते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने भारतीय दर्शन को अन्त: प्रज्ञा से युक्त होने के साथ तार्किक भी बताया जो अन्वीक्षा, परीक्षा और समीक्षा से अपनी राह तय करता है। उन्होंने उपस्थित विद्वजनों से दर्शन का इतिहास पढाने की बजाय उसे जीवनोपयोगी बताते हुए मौजूदा समय में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता ज़ताई। इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के इंडोमेंट लेक्चर के बुद्ध सीरीज पर बोलते हुए प्रो. प्रदीप गोखले ने कहा कि समाज की उपयोगिता लोगों के दुखों को दूर करने में है।

नव भारत भोपाल, सोमवार, 13 फरवरी, 2017

दर्शन के बिना विज्ञान अंधा और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग : प्रो. रामजी सिंह

तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा जैसे विषयों पर पढ़ गए शोधपत्र

भोपाल, 12 फरवरी, नभासं. सांची विश्वविद्यालय में 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो. रामजी सिंह ने रविवार को किया.

प्रो. सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए. प्रो. सिंह ने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग. प्रो. सिंह ने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका

91 वीं दर्शन कांग्रेस सांची विवि में

के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे. उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो. डीएन द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है. ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है.

दैनिक भास्कर दिनांक 13/02/17
पेज - रायसेन भास्कर

दर्शन पर मंथन | सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वी इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस शुरू, वैश्विक दर्शन विकसित करने का अह्वान

दर्शन के बिना विज्ञान अंधा और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग : प्रो. रामजी

भास्कर संवाददाता | रायसेन

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91 वीं भारती दर्शन कांग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो. रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो. सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य आध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए। अब वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें, क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो. डीएन द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है। ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है, लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है।

वेदों को विद्वान अलग-अलग ढंग से करते है वर्णित

बौद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि समस्त मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है जिसे विद्वान अलग-अलग ढंग से वर्णित करते हैं। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो एसआर भट्ट ने भारतीय दर्शन को अल्तः प्रज्ञा से युक्त होने के साथ तार्किक भी बताया।

सत्य के प्रति महिलाओं का आग्रह अलग होता है

स्त्री वाद पर प्रो. श्रीकला नैयर ने कहा कि महिलाओं का सत्य के प्रति आग्रह कुछ अलग और अधिक होता है। डॉ. एस कृष्णन ने शैव सिद्धांत इतिहास काल के पूर्व का दर्शन है जिसमें शिव नैतिक नियम का संचालक है। उन्होंने कर्म सिद्धांत में ईश्वर को संचालक माना। प्रो. प्रदीप गोखले ने कहा कि समाज की उपयोगिता लोगों के दुखों को दूर करने में है।

आज गांधीवादी दर्शन पर होगा मंथन, 34 शोध पत्र पढ़े जाएंगे

13 फरवरी को इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की बैठक में इंडोवमेंट लेक्चर सीरीज में गांधी दर्शन, वेदांत एवं मानववाद पर विद्वानों के विचार होंगे। साथ ही तकनीकी सत्र में दर्शन का इतिहास, तत्व मीमांसा और ज्ञान मीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 34 शोध पत्र पढ़े जाएंगे। इसके उपरांत इच्छामृत्यु विषय पर सिंपोजियम में विद्वान अपने विचार रखेंगे। 14 फरवरी को इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस का समापन होगा।

पत्रिका दिनांक 13/02/17
Pd- रायसेन पत्रिका

पत्रिका
Bhopal . Monday
13/02/2017
live 14 spectrum 15 screen play 16 patrika.com/entertainment

EVENT....

दर्शन का लक्ष्य हो आध्यात्मिकता

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

भोपाल ● सांची बौद्ध विवि में 91वीं भारती दर्शन कांफ्रेंस का शुभारंभ स्वतंत्रता सेनानी गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें। साथ कॉफ्रेंस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो डीएन द्विवेदी ने कहा कि प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है, लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है।

पुर्नजन्म सिद्धांत को हटाया गया : इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के एंडोमेंट लेक्चर के बुद्ध सीरीज पर बोलते हुए प्रो प्रदीप गोखले ने कहा कि समाज की उपयोगिता लोगों के दुखों को दूर करने में है। उन्होने कहा कि अंबेडकर ने कर्म सिद्धांत से पुनर्जन्म के सिद्धांत को हटा दिया था। प्रो श्रीकला नैयर ने कहा कि महिलाओं का सत्य के प्रति आग्रह कुछ अलग और अधिक होता है।

भारती दर्शन कांग्रेस... पत्रिका दिनांक 13/2/17

'वैश्विक दर्शन विकसित करने की आवश्यकता'

रायसेन. कान्फ्रेंस में पहुंचे चिंतक।

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

रायसेन. सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वीं भारतीय दर्शन कांग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें। क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होंने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्यक्र म के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उदघाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो. डीएन द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है। उन्होंने कहा कि ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है, लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है। सांची बौद्ध, भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि समस्त मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है जिसे विद्वान अलग-अलग ढंग से वर्णित करते हैं। बौद्धिक संकल्पनाओं के विश्लेषण के उलट उन्होने दर्शन का व्यावहारिक प्रयोजन मानव दुखों का निवारण बताया। प्रो शास्त्री ने कहा कि सच्चे दार्शनिक लोगों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश और दुख से मुक्ति की कोशिश करते हैं।

विशेष वक्तव्य देते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो एसआर भट्ट ने भारतीय दर्शन को अन्तः प्रज्ञा से युक्त होने के साथ तार्किक भी बताया जो अन्वीक्षा, परीक्षा और समीक्षा से अपनी राह तय करता है। उन्होंने उपस्थित विद्वजनों से दर्शन का इतिहास पढ़ाने की बजाय उसे जीवनोपयोगी बताते हुए मौजूदा समय में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि ज्ञान के कई वैकल्पिक मार्ग हो सकते हैं। प्राचीन ग्रंथों में 54 प्रकार बताए गए हैं। प्रो. भट्ट ने जैन धर्म में पर्यायवाद के सिद्धांत को मौजूदा वक्त में उपयोगी मानते हुए कहा कि पर्यायवाद विज्ञान के संभावनावाद का बेहतर रूप है जो बताता है कि एक अनेक कैसे हो जाता है।

समय जगत 9
सोमवार 13 फरवरी 2017

सांची विवि में एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

मप्र में पहली बार आयोजन आज होगी इंडियन फिलोसॉफिकल कांफेंस की शुरुआत

समय जगत संवाददाता, भोपाल

मप्र में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभांरभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठ बताना चाहता है। उन्होने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है। एशियाई पहचान के सर्वसम्मत सिद्धांतों को प्रतिपादित करने और अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले दार्शनिकों का एक वैश्विक मंच तैयार करने के उद्देश्य से हो रही एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस के मुख्य सत्र में एशियाई परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रबंधन के माध्यम से शांति कायम रखने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विचार हुआ।

अर्चना चिटनिस का दौरा

महिला बाल-विकास मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस 13 फरवरी को बुरहानपुर प्रवास पर रहेंगी। श्रीमती चिटनिस सुबह द्वारकापुरी तथा 9.30 बजे ग्राम नागोनी और इच्छापुर में नागरिकों से भेंट करेंगी।

भोजपाल

आयोजन } सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विवि में भारतीय दर्शन पर सम्मेलन शुरू

बिना दर्शन के विज्ञान अधूरा : प्रो.सिंह

« स्वदेश संवाददाता। भोपाल

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेंस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए। उन्होने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो डी. एन. द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है। उन्होने कहा कि ज्ञान प्रासि के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है। प्रारंभिक वक्तव्य देते हुए सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि समस्त मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है जिसे विद्वान अलग-अलग ढंग से वर्णित करते हैं। बौद्धिक संकल्पनाओं के विश्लेषण के उलट उन्होने दर्शन का व्यावहारिक प्रयोजन मानव दुखों का निवारण बताया। प्रो शास्त्री ने कहा कि सच्चे दार्शनिक लोगों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश और दुख से मुक्ति की कोशिश करते हैं।

दर्शन को पुनर्स्थापित करना होगा : प्रो.भट्ट

उद्घाटन सत्र में विशेष वक्तव्य देते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो एस आर भट्ट ने भारतीय दर्शन को अन्तः प्रज्ञा से युक्त होने के साथ तार्किक भी बताया जो अन्वीक्षा, परीक्षा और समीक्षा से अपनी राह तय करता है। उन्होने उपस्थित विद्वजनों से दर्शन का इतिहास पढ़ाने की बजाय उसे जीवनोपयोगी बताते हुए मौजूदा समय में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता जताई। उन्होने कहा कि ज्ञान के कई वैकल्पिक मार्ग हो सकते है और प्राचीन ग्रंथों में 54 प्रकार बताए गए हैं। प्रो भट्ट ने जैन धर्म में पर्यायवाद के सिद्धांत को मौजूदा वक्त में बेहद उपयोगी मानते हुए कहा कि पर्यायवाद विज्ञान के संभावनावाद का बेहतर रुप है जो बताता है कि एक अनेक कैसे हो जाता है। इंडोमेंट लेक्चर के बुद्ध सीरीज पर बोलते हुए प्रो प्रदीप गोखले ने कहा कि समाज की उपयोगिता लोगों के दुखों को दूर करने में है। उन्होने कहा कि अंबेडकर ने कर्म सिद्धांत से पुनर्जन्म के सिद्धांत को हटा दिया था। स्त्रीवाद पर बोलते हुए प्रो श्रीकला नैयर ने कहा कि महिलाओं का सत्य के प्रति आग्रह कुछ अलग और अधिक होता है। डॉ एस कृष्णन ने आचार्य तुलसी लेक्चर में बोलते हुए कहा कि शैव सिद्धांत इतिहास काल के पूर्व का दर्शन है जिसमें शिव नैतिक नियम का संचालक है।

सांची बौद्ध भारतीय अध्ययन विवि में 91वी इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस शुरु

रायसेन, 12 फरवरी (निप्र)। सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेंस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्य म के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो डी.एन. लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है। उद्घाटन सत्र में प्रारंभिक वक्त व्य देते हुएं सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि समस्त मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है।

आयोजन

सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वी इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस शुरु

दर्शन और विज्ञान को परस्पर पूरक समझकर कार्य करने का समय

सुबह सवेरे, भोपाल

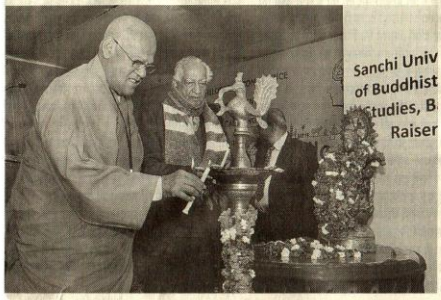

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह ने किया। इस मौके पर प्रो सिंह ने कहा कि दर्शन का लक्ष्य अध्यात्मिकता और व्यावहारिक प्रयोजन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वक्त आ गया है कि हम दर्शन और विज्ञान को पूरक की तरह समझकर कार्य करें क्योंकि बिना दर्शन के विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना दर्शन अपंग। उन्होंने कांग्रेस में मौजूद विद्वानों से वैश्विक दर्शन विकसित करने का आव्हान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनागला उपतिस्स नायक थैरो थे। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष और इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस के महासचिव प्रो डी. एन. द्विवेदी ने कहा कि भारतीय संदर्भ में ज्ञान प्रज्ञा है। उन्होंने कहा कि ज्ञान प्राप्ति के लिए कोई विचार मान्य तो किया जा सकता है लेकिन उसे ज्ञान नहीं समझना चाहिए क्योंकि विचार गलत भी हो सकता है।

उद्घाटन सत्र में प्रारंभिक वक्तव्य देते हुए सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि समस्त मनुष्य जाति एक परिवार है और वेदों के अनुसार सत्य एक ही है जिसे विद्वान अलग-अलग ढंग से वर्णित करते हैं। बौद्धिक संकल्पनाओं के विश्लेषण के उलट उन्होने दर्शन का व्यावहारिक प्रयोजन मानव दुखों का निवारण बताया। प्रो शास्त्री ने कहा कि सच्चे दार्शनिक लोगों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश और दुख से मुक्ति की कोशिश करते हैं।

उद्घाटन सत्र में विशेष वक्तव्य देते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने भारतीय दर्शन को अन्तः प्रज्ञा से युक्त होने के साथ तार्किक भी बताया जो अन्वीक्षा, परीक्षा और समीक्षा से अपनी राह तय करता है। उन्होंने उपस्थित विद्वजनों से दर्शन का इतिहास पढ़ाने की बजाय उसे जीवनोपयोगी बताते हुए मौजूदा समय में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि ज्ञान के कई वैकल्पिक मार्ग हो सकते है और प्राचीन ग्रंथों में 54 प्रकार बताए गए हैं। प्रो. भट्ट ने जैन धर्म में पर्यायवाद के सिद्धांत को मौजूदा वक्त में बेहद उपयोगी मानते हुए कहा कि पर्यायवाद विज्ञान के संभावनावाद का बेहतर रुप है जो बताता है कि एक अनेक कैसे हो जाता है।

इंडियन फिलोसॉफी कांग्रेस के इंडोमेंट लेक्चर के बुद्ध सीरीज पर बोलते हुए प्रो. प्रदीप गोखले ने कहा कि समाज की उपयोगिता लोगों के दुखों को दूर करने में है। उन्होनें कहा कि अंबेडकर ने कर्म सिद्धांत से पुनर्जन्म के सिद्धांत को हटा दिया था। स्त्रीवाद पर बोलते हुए प्रो श्रीकला नैयर ने कहा कि महिलाओं का सत्य के प्रति आग्रह कुछ अलग और अधिक होता है। डॉ एस कृष्णन ने आचार्य तुलसी लेक्चर में बोलते हुए कहा कि शैव सिद्धांत इतिहास काल के पूर्व का दर्शन है जिसमें शिव नैतिक नियम का संचालक है। उन्होने कर्म सिंद्धांत में ईश्वर को संचालक माना।

लेक्चर सीरीज के बाद हुए तकनीकी सत्र में पांच अलग-अलग विषयों यथा- दर्शन का इतिहास, तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा, आचार और सामाजिक दर्शन एवं धर्म पर 39 शोध-पत्र पढ़े गए। दिन के अंतिम सत्र में मौजूदा परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन पर सिंपोसियम में दर्शन के विभिन्न विद्वानों एवं चिंतकों ने अपने विचार व्यक्त किए।

रंगकृति
प्रदर्शनकारी कलाओं पर केंद्रित वेबसाइट
Wednesday, 15 February, 2017. 10:56 am

मध्यप्रदेश

सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

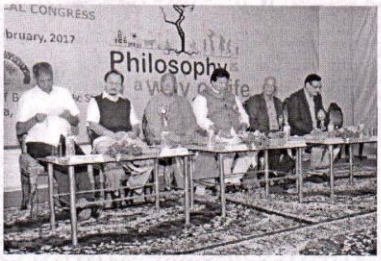

सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

म. प्र. में पहली बार आयोजन, कल होगी इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की शुरुआत

मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। म.प्र. के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस. आर. भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर ज़ोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

एशियाई पहचान के सर्वसम्मत सिद्धांतों को प्रतिपादित करने और अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले दार्शनिकों का एक वैश्विक मंच तैयार करने के उद्देश्य से हो रही एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस के मुख्य सत्र में एशियाई परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रबंधन के माध्यम से शांति कायम रखने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विचार हुआ। गोलमेज बैठक में बहुसांस्कृतिक समाज में न्याय और समानता की चुनौती के एशियाई समाधान पर बात हुई। इसी दौरान समकालीन एशियाई परिप्रेक्ष्य में स्वास्थ्य की अवधारणा को पुनर्भाषित करने पर भी विचारको-चिंतकों ने बहुमूल्य सुझाव एवं विचार दिए।

एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया से प्रो. जियो लियांग ली, श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रोफेसर अशोक अकलुज़कर, शंघाई विवि चीन की प्रो हयान शेन, शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वेंकटचारी चतुर्वेदी स्वामी, कॉलेज ऑफ आर्ट एंव साइंस विभाग कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो बृज सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो बी आर दुग्गड़ जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

4 दिन के इस आयोजन में करीब 250 वैश्विक एवं एशियाई चिंतक-विचारक, दार्शनिक एवं शोधार्थी मानवकल्याण के निमित्त ज्ञान, बुद्धि और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न आयामों पर अपने विचार एक दूसरे से साझा करेंगे। 12 फरवरी को 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह

नेपथ्य में

आज के कार्यक्रम

वैशाली ठक्कर आज शहर में
प्रसिद्ध टीवी व फिल्म कलाकार वैशाली ठक्कर एक टीवी सीरियल प्रमोशन के लिए आज शहर में होंगी। इनके साथ सीरियल के अन्य कलाकार भी मौजूद रहेंगे।

.....

बाग उत्सव
आयोजक : मप्र हस्तशिल्प एवं हथरकघा
स्थान : गौहर महल
समय : दोपहर 12 से प्रारंभ

.....

नाटक का मंचन
आयोजक : नटबुंदेले संस्था
स्थान : शहीद भवन
समय शाम7.00 बजे

.....

नाटक कार्यशाला
आयोजक : विहान नाट्य संस्था
स्थान : आरुषि
समय शाम : 5.30

.....

बंसत मेला
आयोजक : पंचायत एवं ग्रमीण विभाग
स्थान : भोपाल हॉट
समय : दोपहर 02 से रात 08 बजे तक

भोपाल, रविवार, 12 फरवरी 2017 हिन्दी मेल रायसेन

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

दर्शनशास्त्र को जानने जुटे देश-विदेश के मेहमान

निज संवाददाता

रायसेन, 11 फरवरी। मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। शुभारंभ कार्यक्रम में संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श हैं।

उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस. आर भट्ट ने कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होंने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुन: परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

कान्फ्रेंस में विद्वानों का लगा जमघट

एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी दक्षिण कोरिया से प्रो.जियो लियांग ली श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो.दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेटस प्रोफेसर अशोक अकलुजकर, शंघाई विवि चीन की प्रो हयान शेन, शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वैकटचारी चतुर्वेदी स्वामी,कॉलेज ऑफ आर्ट एंव साइंस विभाग कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो बृज सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो बी आर दुग्गड़ जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

4 दिन का आयोजन देश-विदेश से आए विद्वान

4 दिन के इस आयोजन में करीब 250 वैश्विक एवं एशियाई चिंतक,विचारक, दार्शनिक एवं शोधार्थी मानवकल्याण के निमित्त ज्ञान, बुद्धि और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न आयामों पर अपने विचार एक दूसरे से साझा करेंगे। 12 फरवरी को 91वीं भारती दर्शन कॉंग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह करेंगे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता इलाहाबाद विवि.में दर्शनशास्त्र विभाग के प्रमुख रहे प्रो डी एन त्रिवेदी करेंगे।

पीपुल्स समाचार भोपाल, रविवार 12 फरवरी 2017 05

सांची विवि में एशियाई कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

रायसेन। मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलासॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ शनिवार को सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श हैं। मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

पत्रिका Bhopal . SUNDAY 12/02/2017

आदर्श है भारतीय दर्शन

भोपाल ● प्रदेश में पहली बार एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो.एसआर भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कांफ्रेंस के जरिए सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है।

भोपाल । रविवार । 12 फरवरी 2017
नया इंडिया

दुनिया का दर्शनशास्त्र का ज्ञान होगा साझा

सांची बौद्ध भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय में एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

मध्यप्रदेश में पहली बार ऐसा आयोजन

रायसेन ■ प्रादेशिक डेस्क

मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। शुभारंभ कार्यक्रम में संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होंने कहा किमोजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस. आर भट्ट ने कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होंने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी दक्षिण कोरिया से प्रो.जियो लियांग ली श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो सुमनपाला, कॉलेज ऑफ आर्ट एंव साइंस विभाग कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो बृज सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो बी आर दुग्गड़ जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

नवदुनिया दिनांक 12/02/17
पेज 18

www.starsamachar.com
भोपाल, रविवार 12 फरवरी 2017 3

भारतीय और बौद्ध परंपराएं विश्व एकता के लिए आदर्श : पटवा

रायसेन। सांची यूनिवर्सिटी में कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ करते पर्यटन मंत्री सुरेन्द्र पटवा।

■ मप्र में पहली बार आयोजन, कल होगी इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की शुरुआत

रायसेन। मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। म.प्र. के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवनस्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होंने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है। एशियाई पहचान के सर्वसम्मत सिद्धांतों को प्रतिपादित करने और अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले दार्शनिकों का एक वैश्विक मंच तैयार करने के उद्देश्य से हो रही एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस के मुख्य सत्र में एशियाई परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रबंधन के माध्यम से शांति कायम रखने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विचार हुआ।

सांची विवि में एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का पटवा ने किया शुभारंभ

रायसेन। मप्र में पहली बार आयोजित एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है।

उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। पटवा ने एशियाई फिलॉसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है, जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी।

हरिभूमि भोपाल, रविवार 12 फरवरी 2017 03

फिलोसॉफी कांफ्रेंस | प्रदेश में पहली बार आयोजन, इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की होगी शुरुआत

बौद्ध परंपराएं विश्व एकता के लिए आदर्श

हरिभूमि न्यूज. भोपाल

शनिवार को प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है।

मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

इन्होंने लिया क्रॉफ्रेंस में हिस्सा

कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया से प्रो. जियो लियांग ली, श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो. ली मॉन थेट मौजूद रहे।

पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है, जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरूआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया।

दैनिक लोकदेश | भोपाल, रविवार 12 फरवरी 2017 | www.lokdesh.com | 09 देश-राय

—संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने किया एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ—

'वैदिक और बौद्ध परम्पराएं विश्व एकता के लिए आदर्श'

लोकदेश ब्यूरो ■ रायसेन

प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। पटवा ने एशियाई फिलॉसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरूआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलॉसफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एस. आर. भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है।

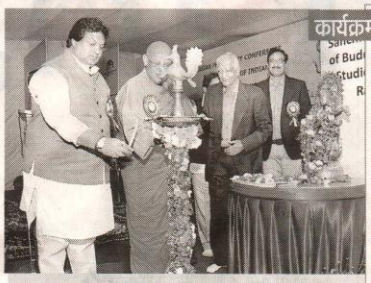

नए ज्ञान का सृजन

भट्ट ने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होंने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

कार्यक्रम में ये होंगे शामिल

एशियाई फिलॉसफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया से प्रो. जियो लियांग ली, श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो. ली मॉन थट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो. रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो. सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रो. अशोक अकलुजकर, शंघाई विवि चीन की प्रो हयान शेन, शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वेंकटचारी चतुर्वेदी स्वामी जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

बौद्ध यूनिवर्सिटी में एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

प्रदेश के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने किया कार्यक्रम का उद्घाटन

जागरण, रायसेन

मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में हुआ। मप्र के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श है। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन भी दिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से. ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया। एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने उद्घाटन सत्र में कहा कि पश्चिमी दर्शन में बुद्धि पर जोर होता है जबकि पूर्वी दर्शन में बुद्धि के साथ जीवन जीने और जीवन स्तर को ऊंचा उठाने पर खासा ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन विश्वमानव की अवधारणा पर कार्य करता है जो मौजूदा दौर में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिये सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है। उन्होंने कहा कि सांची विवि वैदिक एवं बौद्ध दर्शन के सूत्रों को एकीकृत करने, भारतीय दर्शन को मौजूदा परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित करने और नए ज्ञान के सृजन के प्रति प्रतिबद्ध है।

गोलमेज बैठक में बहुसांस्कृतिक समाज में न्याय और समानता की चुनौती के एशियाई समाधान पर बात हुई। इसी दौरान समकालीन एशियाई परिप्रेक्ष्य में स्वास्थ्य की अवधारणा को पुनर्भाषित करने पर भी विचारको, चिंतकों ने बहुमूल्य सुझाव एवं विचार दिए। एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी, दक्षिण कोरिया से प्रो. जियो लियांग ली, श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो. दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो. ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो. रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो. सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रोफेसर अशोक अकलुजकर, शंघाई विवि चीन की प्रो. हयान शेन, शिवानंद आश्रम एमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वेंकटचारी चतुर्वेदी स्वामी, कॉलेज ऑफ ऑर्ट एंव साइंस विभाग कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो. बृज सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो. बीआर दुग्गड़ जैसे विशिष्ट विद्वान पहुंचे है।

4 दिन के इस आयोजन में करीब 250 वैश्विक एवं एशियाई चिंतक, विचारक, दार्शनिक एवं शोधार्थी मानवकल्याण के निमित्त ज्ञान, बुद्धि और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न आयामों पर अपने विचार एक दूसरे से साझा करेंगे। 12 फरवरी को 91वीं भारती दर्शन कॉग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह करेंगे। इस कार्यकर्म की अध्यक्षता इलाहाबाद विवि में दर्शनशास्त्र विभाग के प्रमुख रहे प्रो. डीएन द्विवेदी करेंगे।

दैनिक जागरण दिनांक 12/02/17
Pg. रायसेन जागरण Pg. 04

दैनिक भास्कर दिनांक 12/02/17
Pg - रायसेन भास्कर मेन पेज

सांची ने ही एशिया को दिया नया दर्शन और जीवन व्यवहारः पटवा

भास्कर संवाददाता | रायसेन

मध्य प्रदेश में पहली बार आयोजित एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ बारला गांव स्थित सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में हुआ। शनिवार से शुरू हुई कॉन्फ्रेंस 14 फरवरी तक चलेगी। इस दौरान देश और विदेश से आए विद्वान दर्शन शास्त्र को लेकर मंथन कर रहे हैं।

उद्घाटन करते हुए प्रदेश के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री सुरेंद्र पटवा ने कहा कि वैदिक एवं बौद्ध परंपराएं एशियाई और विश्व एकता के लिए आदर्श हैं। उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भारतीय दर्शन के तत्वों को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। श्री पटवा ने एशियाई फिलोसॉफिकल कॉन्फ्रेंस से मिलने वाले बिंदुओं को क्रियान्वित कराने में संस्कृति मंत्रालय की मदद का आश्वासन दिया।

अध्यक्षता करते हुए श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागल उपतिस्स नायक थैरो ने कहा कि पश्चिमी दर्शन बहस करने की चीज है जबकि पूर्वी दर्शन व्यवहार में उतारने की। श्री थैरो ने कहा कि प्रवासी दिवस की शुरुआत सर्वप्रथम सांची से ही हुई थी और सांची ने ही एशिया को एक नया दर्शन और जीवन व्यवहार दिया।

सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो.यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि एशियाई कॉन्फ्रेंस के जरिए सांची विवि दर्शन विश्व को अपनी गंभीरता और दर्शन के प्रति निष्ठा बताना चाहता है।

एशियाई फिलोसॉफी कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ ,कल होगी इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस की शुरुआत

प्रकृति को बचाने के लिए कार्य करें : भट्ट

एशियाई फिलोसॉफी कांग्रेस के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने भास्कर से चर्चा करते हुए कहा कि पर्यावरण के असंतुलन से शांति भंग होती है। उन्होंने कहा कि प्रकृति के प्रति अपना दृष्टिकोण रखें और उसे बचाने की दिशा में काम करें। इसके साथ ही हमारी भावी पीढ़ी को प्राकृतिक संसाधन से वंचित न करें। हम संसाधनों का उतना ही उपयोग करें, जितनी हमारी आवश्यकता है। इस कांफ्रेंस के माध्यम से भारतीय संस्कृति को विश्व में पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं।

संस्कृति, पर्यावरण और शांति पर मंथन

मुख्य सत्र में एशियाई परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रबंधन के माध्यम से शांति कायम रखने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विचार हुआ। समाज में न्याय और समानता की चुनौती के एशियाई समाधान पर बात हुई। स्वास्थ्य की अवधारणा को पुनर्भाषित करने पर भी विचारकों-चिंतकों ने बहुमूल्य सुझाव एवं विचार दिए।

संस्कृत के बिना सभी दर्शन अधूरा : अकलुजकर

कनाडा से आए एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रोफेसर अशोक अकलुजकर ने बताया कि संस्कृत के बिना सभी दर्शन अधूरे हैं। दर्शन की आवश्यकता को लेकर कनाडा और भारत में समानता है। भारत में पहले से ही दर्शन को लेकर लोग जागरूक हैं, लेकिन कनाडा में अब इसको लेकर लोग रुचि दिखा रहे हैं। कनाडा में संस्कृत पढ़ने को लेकर लोगों में रुचि बढ़ी है।

देश और विदेश से आए ये विद्वान

कॉन्फ्रेंस में सन मून यूनिवर्सिटी दक्षिण कोरिया से प्रो. जियो लियांग ली,श्रीलंका के आधिकारिक भाषा आयोग के चेयरमैन प्रो. दया इदीरिसिंघे, वियतनाम बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी होची मिन्ह सिटी के प्रो. ली मॉन थेट, मियामी विवि अमेरिका के प्रो. रामाराव पप्पू, श्रीलंका के परास्नातक पाली एवं बौद्ध संस्थान के निदेशक प्रो. सुमनपाला, आचार्य सभा के महासचिव स्वामी परमात्मानंदजी, कनाडा में एशियाई अध्ययन के एमिरेट्स प्रोफेसर अशोक अकलुजकर, शंघाई विवि चीन की प्रो. हयान शेन, शिवानंद आश्रम अमदाबाद के स्वामी अध्यात्मानंदजी, इलाहाबाद विवि के दर्शन विभाग के पूर्व प्रमुख प्रो. जटाशंकर तिवारी, चेन्नई से प्रो. वेंकटचारी चतुर्वेदी स्वामी, कनाडा में धार्मिक शिक्षा विभाग के प्रो. बृज सिन्हा और जैन विश्व भारती विवि के कुलपति प्रो. बी आर दुग्गड़ पहुंचे हैं।

नवदुनिया दिनांक 11/2/17
Pg - 16

सांची यूनिवर्सिटी में आज आएंगे मुख्यमंत्री

रायसेन के पास ग्राम बारला में आयोजित होगा कार्यक्रम

रायसेन (ब्यूरो)। ग्राम बारला स्थित सांची यूनिवर्सिटी में शुरू हो रही चार दिवसीय ऐशियन फिलोसपी कार्यशाला का मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान शनिवार को शुभारंभ करेंगे। वे सुबह 10 बजे सांची यूनिवर्सिटी पहुंचेंगे। इस दौरान उनके साथ श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के अध्यक्ष बानगल उपथिस्स नायक थैरो, वनमंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री सुरेन्द्र पटवा भी उपस्थित रहेंगे। इस कार्यशाला में दर्शन शास्त्र से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। साथ ही दर्शनशास्त्र के विद्वान अपने व्याख्यान देंगे। कार्यशाला के दूसरे दिन 12 फरवरी को 91वीं इंडिया फिलोसपिकल कांग्रेस में प्रसिद्ध दर्शनशास्त्री प्रो. राम जी. सिंह एवं इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के फिलोसपी विभाग प्रमुख प्रो. डी.एन. द्विवेदी दर्शनशास्त्र पर अपने व्याख्यान देंगे। एवं 14 फरवरी को पूना के प्रो. ए.पी. जमखेड़कर एवं महिला एवं बाल विकास विभाग मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनीस एवं इंडिया काउंसिल ऑफ फिलोसपिकल रिसर्च नईदिल्ली के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट उपस्थित रहकर व्याख्यान देंगे।

नई दुनिया 11/2/17
Pg - 16

पत्रिका
Bhopal . Friday
10/02/2017

एशियन फिलॉस्फी कांफ्रेंस आज से

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

भोपाल ● मध्य प्रदेश में पहली बार एशियाई फिलॉस्फी कांफ्रेंस का आयोजन होने जा रहा है। सांची विवि में होने वाली इस कांफ्रेस में कई देशों से एक्सपर्ट पहुंच रहे है। कांफ्रेस का शुभारंभ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान करेंगे। 11 से 14 फरवरी के दौरान विश्वविद्यालय में एशियन फिलॉस्फी कांफ्रेंस के साथ 91वीं इंडियन फिलोसॉफिकल कांग्रेस का आयोजन भी होगा। एशियाई फिलॉस्फिकल कांफ्रेंस में श्रीलंकाई महाबोधि सोसायटी के बनागला उपतिस्स नायक थैरो, वन मंत्री डॉ. गौरीशंकर शेजवार, पयर्टन एवं संस्कृति मंत्री सुरेंद्र पटवा भी शामिल होंगे। इस दौरान एशियाई परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण प्रबंधन के माध्यम से शांति कायम रखने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विचार होगा। 4 दिन के इस आयोजन में करीब 250 वैश्विक एवं एशियाई चिंतक-विचारक, दार्शनिक एवं शोधार्थी मानवकल्याण के निमित्त ज्ञान, बुद्धि और प्रायोगिक पक्ष के विभिन्न आयामों पर अपने विचार एक दूसरे से साझा करेंगे। 12 फरवरी को 91वीं भारती दर्शन कांग्रेस का शुभारंभ मशहूर स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी और दार्शनिक प्रो रामजी सिंह करेंगे।

दैनिक जागरण
1 मार्च, 2017

सांची विश्वविद्यालय में सांस्कृतिक महोत्सव

स्टूडेंन्ट्स ने बिखेरे जलवे

जागरण सिटी रिपोर्टर । सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में यादगार प्रस्तुतियों एवं कार्यक्रम के साथ सांस्कृतिक समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम के दौरान छात्रों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों ने विभिन्न रंगारंग प्रस्तुतियां दी। सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने उद्घाटन समारोह में कहा कि संस्कृति, संस्कार, आचार, विचार और व्यवहार का मेल है।

नाटक ने खूब गुदगुदाया

संस्कृति उत्सव के मौके पर विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रस्तुत नाटक 'युगपुरुष' ने लोगों का दिल जीत लिया। विश्वविद्यालय के कर्मचारी छत्रपाल सिंह द्वारा प्रस्तुत एकल नाटक 'मोमबत्ती' ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया। छात्र शरद सोनवाने ने 'भारत की बात सुनाता हूं' प्रस्तुत कर लोगों को देशभक्ति के भाव से भर दिया। प्राध्यापक नवीन दीक्षित ने 'सभी देशों से प्यारा देश है मेरा' गीत प्रस्तुत किया। छात्राओं प्रियंका एवं मुस्कान ने एकल शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए।

खूब चला कविताओं का दौर

पीएचडी छात्र अशरफ वानी ने इकबाल और गालिब की कविताओं की प्रस्तुति दी। विश्वविद्यालय की चिकित्सक डॉ. ऋतु श्रीवास्तव द्वारा श्रृंगार रस की कविता 'सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं पीले फूल' प्रस्तुत की गई। सहायक प्राध्यापक डॉ. सुश्मिता नंदी और छात्रा चारू सिन्हा ने रवींद्र नाथ टैगोर द्वारा लिखित बांग्ला कविता 'पुण्य करो' प्रस्तुत की।

नृत्य का चला दौर

छात्रों ने मंच पर जल नेती की प्रक्रिया भी संपन्न की। छात्र दीपक तिवारी, अजीत और आशीष ने कालीदास के महाकाव्य मेघदूत की कविता का एक अंश प्रस्तुत किया। संस्कृति विभाग के छात्र उमाशंकर कौशिक ने प्राध्यापकों की मिमिक्री कर सबको हंसाया और भोजपुरी गीत पर नृत्य प्रस्तुति दी।

citybhaskar 01/03/2017

उत्सव में पेश किए नाटक, कविताएं और कहानियां

सिटी रिपोर्टर • सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में संस्कृति उत्सव के मौके पर विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रस्तुत नाटक 'युगपुरुष' की प्रस्तुति दी गई। विश्वविद्यालय के कर्मचारी छत्रपाल सिंह द्वारा प्रस्तुत एकल नाटक 'मोमबत्ती' ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया। छात्र शरद सोनवाने ने 'भारत की बात सुनाता हूं' प्रस्तुत कर लोगों को देशभक्ति के भाव से भर दिया। प्राध्यापक नवीन दीक्षित ने 'सभी देशों से प्यारा देश है मेरा' गीत प्रस्तुत किया। छात्राओं प्रियंका और मुस्कान ने एकल शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए। पीएचडी छात्र अशरफ वानी ने इकबाल और गालिब की कविताओं की प्रस्तुति दी। विश्वविद्यालय की चिकित्सक डॉ. ऋतु श्रीवास्तव द्वारा श्रृंगार रस की कविता 'सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं पीले फूल' प्रस्तुत की गई। सहायक प्राध्यापक डॉ सुष्मिता नंदी और छात्रा चारू सिन्हा ने रविंद्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित बांग्ला कविता 'पुण्य करो' प्रस्तुत की। योग विभाग के छात्रों द्वारा संगीत पर योग की शानदार प्रस्तुति दी गई। छात्रों ने मंच पर जल नेती की प्रक्रिया भी संपन्न की।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, बुधवार, 1 मार्च 2017

सांस्कृतिक उत्सव में दिखे संस्कृति के कई रंग

निज संवाददाता

रायसेन, 28 फरवरी। सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में यादगार प्रस्तुतियों एवं कार्य म के साथ सांस्कृतिक समारोह संपन्न हुआ। कार्य म के दौरान छात्रों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों ने विभिन्न प्रस्तुतियां दी। सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो.यज्ञेश्वर शास्त्री ने उद्घाटन समारोह में कहा कि संस्कृतिय संस्कार, आचार, विचार और व्यवहार का मेल है।

संस्कृति उत्सव के मौके पर विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रस्तुत नाटक युगपुरुष ने लोगों का दिल जीत लिया। विश्वविद्यालय के कर्मचारी छत्रपाल सिंह द्वारा प्रस्तुत एंकल नाटक मोमबत्ती ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया। छात्र शरद सोनवाने ने भारत की बात सुनाता हूं

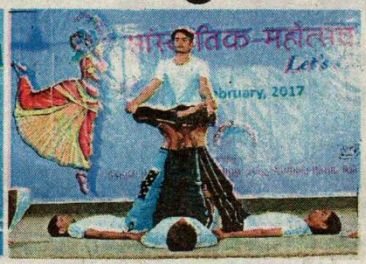

प्रस्तुत कर लोगों को देशभक्ति के भाव से भर दिया। प्राध्यापक नवीन दीक्षित ने सभी देशों से प्यारा देश है मेरा गीत प्रस्तुत किया। छात्राओं प्रियंका एवं मुस्कान ने एकल शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए। पीएचडी छात्र अशरफ वानी ने इकबाल और ग़ालिब की कविताओं की प्रस्तुती दी। विश्वविद्यालय की चिकित्सक डॉ.ऋतु श्रीवास्तव द्वारा श्रृंगार रस की कविता सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं पीले फूल प्रस्तुत की गई। सहायक प्राध्यापक डॉ सुश्मिता नंदी और छात्रा चारू सिन्हा ने रविंद्र नाथ टौगोर द्वारा लिखित बांग्ला कविता पुण्य करो प्रस्तुत की।

संगीत पर योग की शानदार प्रस्तुति

संस्कृति उत्सव के मौके पर विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रस्तुत में योग विभाग के छात्रों द्वारा संगीत पर योग की शानदार प्रस्तुति दी गई। छात्रों ने मंच पर जल नेती की प्रक्रिया भी संपन्न की। छात्र दीपक तिवारी,अजीत और आशीष ने कालीदास के महाकाव्य मेघदूत की कविता का एक अंश प्रस्तुत किया। संस्कृत विभाग के छात्र उमाशंकर कौशिक ने प्राध्यापकों की मिमिक्री कर सबको हंसाया और भोजपुरी गीत पर नृत्य प्रस्तुति भी दी।

हस्तलिपि पर आधारित कार्यशाला 3 मार्च से

सांची विश्वविद्यालय में पांडुलिपि एवं हस्तलिपि पर आधारित कार्यशाला का आयोजन 03 मार्च से 09 मार्च के दौरान हो रहा है। कार्यशाला उद्देश्य भारतीय ग्रंथों को संरक्षित करने की विधि विकसित करने की प्रक्रिया तैयार करना है।

Wednesday
March 1, 2017

FREEPRESS

Cultural programme at Sanchi varsity

• OUR STAFF REPORTER
BHOPAL

A cultural programme was organised at Sanchi University for Buddhist-Indic Studies. A drama titled 'Yugpurush' was highly appreciated by the audience. Solo drama titled 'Mombatti' was equally praised. The students and teachers also presented songs.

Classical dances, poems, display of Yogic skills, mimicry and folk dances were also presented in the programme.

भोपाल, शुक्रवार 3 मार्च, 2017 |7

दैनिक भास्कर

न्यूज ब्रीफ

दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की पांडुलिपियों को 'डीकोड' करने पर आज से सांची विवि में चर्चा

भोपाल| सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में शिलालेखों का अध्ययन, पांडुलिपि विज्ञान और उन पर हुए शोध पर शुक्रवार से सात दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इस दौरान दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की पांडुलिपियों को 'डीकोड' करने के प्रयास पर चर्चा होगी। भारतीय उपमहाद्वीप के अलावा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों जैसे कंबोडिया, वियतनाम, म्यांमार मलेशिया, इंडोनेशिया में बौद्ध दर्शन से जुड़ी शिक्षाएं एवं उनसे जुड़े पांडुलिपियां, शिलालेख मौजूद हैं जो आज भी ज्ञान के अभाव में पढ़े नहीं जा सके हैं।

दैनिक भास्कर रायसेन भास्कर

पांडुलिपि और लिपि विज्ञान पर विद्वान आज करेंगे मंथन

रायसेन | सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा 3 से 9 मार्च तक शिलालेखों का अध्ययन, पांडुलिपि विज्ञान और उन पर शोध प्रविधियों पर कार्यशाला आयोजित की जा रही है। कार्यशाला में कोलकाता विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. रत्ना बसु, जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय उड़ीसा के धर्मशास्त्र एवं नीतिशास्त्र के प्रो. ब्रज किशोर स्वाई, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, सांची विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति प्रो. शशि प्रभा कुमार, पूना विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की प्राध्यापिका प्रो. निर्मला कुलकर्णी, गुजरात विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पूर्व प्राध्यापिका प्रो. सुनंदा शास्त्री, वैदिक विद्वान डॉ सुद्युम्नाचार्य शामिल होंगे।

अब तक नहीं पढ़ी जा सकीं कई पांडुलिपियां

भारतीय उपमहाद्वीप के अलावा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों जैसे कंबोडिया, विएतनाम, म्यांमार मलेशिया, इंडोनेशिया में बौद्ध दर्शन से जुड़ी शिक्षाएं और शिलालेख मौजूद हैं जो आज भी ज्ञान के अभाव में पढ़े नहीं जा सके हैं। कार्यशाला में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में मौजूद पांडुलिपियों पर लिखी लिपि को भारत में मौजूद पांडुलिपियों के माध्यम से डीकोड करने के तरीके विकसित करने पर चर्चा की जाएगी।

patrika
01.03.17

सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं पीले फूल

सांची विवि में सांस्कृतिक महोत्सव

भोपाल • सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में सांस्कृतिक समारोह संपन्न हुआ। इस छात्रों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों ने कई प्रस्तुतियां दी। कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि संस्कृतिय संस्कार, आचार, विचार और व्यवहार का मेल है। मौके पर छात्रों द्वारा प्रस्तुत नाटक 'युगपुरुष' ने लोगों का दिल जीत लिया। छत्रपाल सिंह द्वारा प्रस्तुत एकल नाटक 'मोमबत्ती' ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया। प्रियंका एवं मुस्कान ने एकल शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए। पीएचडी छात्र अशरफ वानी ने इकबाल और ग़ालिब की कविताओं की प्रस्तुति दी। चिकित्सक डॉ. ऋतु श्रीवास्तव द्वारा श्रृंगार रस की कविता 'सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं पीले फूल...' प्रस्तुत दी गई।

हरिभूमि

भोपाल, बुधवार 1 मार्च 2017

आयोजन | सांची विवि में सांस्कृतिक समारोह में छात्रों-प्राध्यापकों समेत कर्मचारियों ने दी प्रस्तुतियां

संगीत पर योग की प्रस्तुतियों से जीता दिल

हरिभूमि न्यूज. भोपाल

मंगलवार को सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में यादगार प्रस्तुतियों एवं कार्यक्रम के साथ सांस्कृतिक समारोह का समापन हुआ। कार्यक्रम के दौरान छात्रों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों ने विभिन्न प्रस्तुतियां दीं। सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने उद्घाटन समारोह में कहा कि संस्कृति, संस्कार, आचार, विचार और व्यवहार का मेल है। विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रस्तुत नाटक युगपुरुष ने लोगों का दिल जीत लिया।

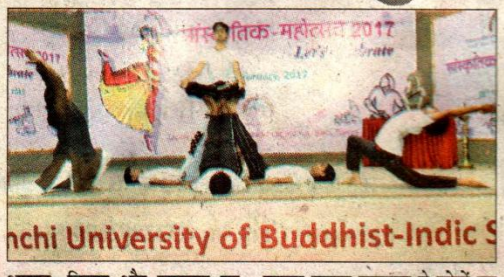

एकल शास्त्रीय नृत्य से बांधा समां

छात्रा प्रियंका एवं मुस्कान ने एकल शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए। पीएचडी छात्र अशरफ वानी ने इकबाल और गालिब की कविताओं की प्रस्तुति दी। विवि की चिकित्सक डॉ. ऋतु श्रीवास्तव द्वारा श्रृंगार रस की कविता सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं, पीले फूल, प्रस्तुत की गई। सहायक प्राध्यापक डॉ. सुश्मिता नंदी और छात्रा चारू सिन्हा ने रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा लिखित बांग्ला कविता पुण्य करो प्रस्तुत की। योग विभाग के छात्रों द्वारा संगीत पर योग की शानदार प्रस्तुति दी गई। छात्रों ने मंच पर जल नेती की प्रक्रिया भी संपन्न की। छात्र दीपक तिवारी, अजीत और आशीष ने कालीदास के महाकाव्य मेघदूत की कविता का एक अंश प्रस्तुत किया।

नवभारत भोपाल, बुधवार, 1 मार्च, 2017

'मोमबत्ती' नाटक से दर्शकों को जमकर गुदगुदाया

सांची विश्वविद्यालय में सांस्कृतिक महोत्सव संपन्न

भोपाल, 28 फरवरी. नभास. सांची विश्वविद्यालय में मंगलवार को सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया. कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा यादगार प्रस्तुतियाँ दी गई. सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने उद्घाटन समारोह में कहा कि संस्कृति संस्कार, आचार, विचार और व्यवहार का मेल है

नाटक व देशभक्ति गानो से किया भावविभोर -संस्कृति उत्सव के मौके पर विवि के छात्रों द्वारा नाटक युगपुरुष प्रस्तुत किया गया. नाटक युगपुरुष की प्रस्तुति ने उपस्थित लोगों का दिल जीत लिया. विवि के कर्मचारी छत्रपाल सिंह द्वारा प्रस्तुत एकल नाटक 'मोमबत्ती' ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया. छात्र शरद सोनवाने ने भारत की बात सुनाता हूं गीत प्रस्तुत कर लोगों को देशभक्ति के भाव से भर दिया. प्राध्यापक नवीन दीक्षित ने सभी देशों से प्यारा देश है मेरा गीत प्रस्तुत किया.

सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं पीले फूल...

छात्राओं प्रियंका एवं मुस्कान ने एकल शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए पीएचडी छात्र अशरफ वानी ने इकबाल और गालिब की कविताओं की प्रस्तुती दी. विश्वविद्यालय की चिकित्सक डॉ. ऋतु श्रीवास्तव द्वारा श्रृगार रस की कविता सूखी सुनहरी डाल पर खिलते है पीले फूल प्रस्तुत की गई. सहायक प्राध्यापक डॉ सुश्मिता नदी और छात्रा वारू सिन्हा ने रविद नाथ टौगोर द्वारा लिखित बाग्ला कविता पुण्य करो प्रस्तुत की. योग विभाग के छात्रों द्वारा सगीत पर योग की शानदार प्रस्तुति दी गई। छात्रों ने मच पर जल नेती की प्रक्रिया भी सपन्न की. छात्र दीपक तिवारी, अजीत और आशीष ने कालीदास के महाकाव्य मेघदूत की कविता का एक अश प्रस्तुत किया. संस्कृत विभाग के छात्र उमाशकर कौशिक ने प्राध्यापको की मिमिक्री कर सबको हसाया और भोजपुरी गीत पर नृत्य प्रस्तुत भी दी.

पीपुल्स समाचार भोपाल, बुधवार 01 मार्च, 2017

संस्कार, आचार-विचार और व्यवहार का मेल है 'संस्कृति'

सांची विवि में आयोजित हुआ सांस्कृतिक उत्सव

यंग रिपोर्टर • भोपाल
editor@peoplessamachar.co.in

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में यादगार प्रस्तुतियों एवं कार्यक्रम के साथ सांस्कृतिक समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम के दौरान छात्रों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों ने विभिन्न प्रस्तुतियां दी। सांची विवि के कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने उद्घाटन समारोह में कहा कि संस्कृति- संस्कार, आचार, विचार और व्यवहार का मेल है।

'युगपुरुष' ने जीता दिल

संस्कृति उत्सव के मौके पर विवि के छात्रों द्वारा प्रस्तुत नाटक 'युगपुरुष' ने लोगों का दिल जीत लिया। विवि के कर्मचारी छत्रपाल सिंह द्वारा प्रस्तुत एकल नाटक 'मोमबत्ती' ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया। छात्र शरद सोनवाने ने 'भारत की बात सुनाता हूं' प्रस्तुत कर लोगों को देशभक्ति के भाव से भर दिया।

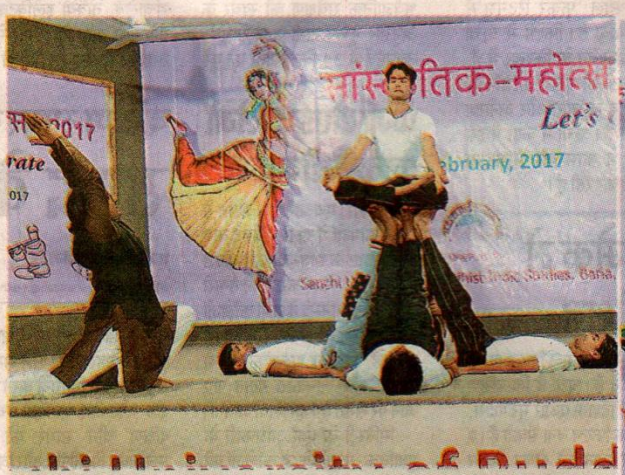

नृत्य के साथ साहित्य का भी ज्ञान

छात्राएं प्रियंका एवं मुस्कान ने एकल शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए। वहीं पीएचडी छात्र अशरफ वानी ने इकबाल और गालिब की कविताओं की प्रस्तुति दी। विवि की चिकित्सक डॉ. ऋतु श्रीवास्तव द्वारा श्रृंगार रस की कविता 'सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं पीले फूल' प्रस्तुत की गई। सहायक प्राध्यापक डॉ. सुश्मिता नंदी और छात्रा वारू सिन्हा ने रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा लिखित बांग्ला कविता 'पुण्य करो' प्रस्तुत की। योग विभाग के छात्रों द्वारा संगीत पर योग की शानदार प्रस्तुति दी गई।

नाक से पानी निकालकर समझाए जलनेती के फायदे

संस्कृति उत्सवः छात्रों ने नाटक से बताया संस्कार, संस्कृति का संदेश, देशभक्ति के गीत गाए

भास्कर संवाददाता | रायसेन

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में यादगार प्रस्तुतियों एवं कार्यक्रम के साथ सांस्कृतिक समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम के दौरान छात्रों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों ने प्रस्तुति दी।

संस्कृति उत्सव के मौके पर विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा प्रस्तुत नाटक युगपुरुष ने लोगों का दिल जीत लिया। विश्वविद्यालय के कर्मचारी छत्रपाल सिंह द्वारा प्रस्तुत एकल नाटक मोमबत्ती ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया। छात्र शरद सोनवाने ने भारत की बात सुनाता हूं, प्रस्तुत कर लोगों को देशभक्ति के भाव से भर दिया। छात्राओं प्रियंका एवं मुस्कान ने एकल शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए। पीएचडी छात्र अशरफ वानी ने इकबाल और ग़ालिब की कविताओं की प्रस्तुति दी। विश्वविद्यालय की चिकित्सक डॉ. ऋतु श्रीवास्तव द्वारा श्रृंगार रस की कविता सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं पीले फूल प्रस्तुत की गई। सहायक प्राध्यापक डॉ सुष्मिता नंदी और छात्रा चारू सिन्हा ने रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा लिखित बांग्ला कविता पुण्य करो प्रस्तुत की। छात्रों ने जल नेती की प्रक्रिया भी संपन्न की। कालीदास के महाकाव्य मेघदूत की कविता का एक अंश प्रस्तुत किया।

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में हुए वार्षिक उत्सव में प्रस्तुति देते विद्यार्थी।

पांडुलिपि व हस्तलिपि पर कार्यशाला 3 से

सांची विश्वविद्यालय में पांडुलिपि एवं हस्तलिपि पर आधारित कार्यशाला Manuscriptology, Palaeography & Research Methodology का आयोजन 3 मार्च से 9 मार्च के दौरान हो रहा है। कार्यशाला ग्रंथों को संरक्षित करने की विधि विकसित करने की प्रक्रिया तैयार करना है।

---

patrika
01.03.17

सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं पीले फूल

सांची विवि में सांस्कृतिक महोत्सव

भोपाल • सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में सांस्कृतिक समारोह संपन्न हुआ। इस छात्रों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों और कर्मचारियों ने कई प्रस्तुतियां दी। कुलपति आचार्य प्रो. यज्ञेश्वर शास्त्री ने कहा कि संस्कृतिय संस्कार, आचार, विचार और व्यवहार का मेल है। मौके पर छात्रों द्वारा प्रस्तुत नाटक 'युगपुरुष' ने लोगों का दिल जीत लिया। छत्रपाल सिंह द्वारा प्रस्तुत एकल नाटक 'मोमबत्ती' ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया। प्रियंका एवं मुस्कान ने एकल शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए। पीएचडी छात्र अशरफ वानी ने इकबाल और ग़ालिब की कविताओं की प्रस्तुति दी। चिकित्सक डॉ. ऋतु श्रीवास्तव द्वारा श्रृंगार रस की कविता 'सूखी सुनहरी डाल पर खिलते हैं पीले फूल...' प्रस्तुत दी गई।

नवदुनिया
भोपाल, शुक्रवार 03 मार्च 2017

पांडुलिपि विज्ञान पर कार्यशाला आज से

भोपाल। सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि में 3 से 9 मार्च तक शिलालेखों का अध्ययन, पांडुलिपि विज्ञान और उन पर शोध प्रविधियों से संबंधित कार्यशाला आजोयित की जा रही है। विवि के अकादमिक परिसर बारला, रायसेन में आयोजित कार्यशाला में भारत के विभिन्न विवि से विशेषज्ञ शोधार्थी सम्मिलित होंगे। सम्मिलित होने वाले विद्वान पाण्डुलिपि विज्ञान एवं लिपि विज्ञान पर शोधार्थियों की कार्यशाला लेंगे। इसमें कोलकाता विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. रत्ना बसु, जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय उड़ीसा के धर्मशास्त्र एवं नीतिशास्त्र के प्रो. ब्रज किशोर स्वाई, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, सांची विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति प्रो. शशि प्रभा कुमार, पुणे विवि के संस्कृत विभाग की प्राध्यापिका प्रो. निर्मला कुलकर्णी आदि विद्वान अपने विचार व्यक्त करेंगे।

CITY LIVE
patrika.com/entertainment पत्रिका PLUS.16 Bhopal . Friday . 03/03/2017

पांडुलिपि, लिपि विज्ञान पर वर्कशॉप आज

भोपाल • सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा 3 से 9 मार्च तक शिलालेखों का अध्ययन, पांडुलिपि विज्ञान और उन पर शोध प्रविधियों पर कार्यशाला आजोयित की जा रही है। इसके जरिए भारतीय ज्ञान परंपरा में जो भी लिखित साहित्य, मानवीय ज्ञान के अभाव में अब तक लिपिबद्ध नहीं किया जा सका है, उसे विश्व के सामने लाया जाएगा।

दरअसल, भारतीय उपमहाद्वीप के अलावा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों जैसे कंबोडिया, विएतनाम, म्यांमार मलेशिया, इंडोनेशिया में बौद्ध दर्शन से जुड़ी शिक्षाएं एवं उनसे जुड़े पांडुलिपियां, शिलालेख मौजूद हैं जो आज भी ज्ञान के अभाव में पढ़े नहीं जा सके हैं। कार्यशाला में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में मौजूद पांडुलिपियों पर लिखि लिपि को भारत में मौजूद पांडुलिपियों के माध्यम से 'डीकोड' करने के तरीके विकसित करने पर चर्चा की जाएगी।

सांध्य प्रकाश 7
भोपाल, शुक्रवार 3 मार्च 2017

सांची विवि में पांडुलिपि और लिपि विज्ञान पर कार्यशाला आज से

दैनिक सांध्यप्रकाश . भोपाल

दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की पांडुलियियों को डीकोड करने के प्रयास पर होगी चर्चा

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय द्वारा 3 से 9 मार्च तक शिलालेखों का अध्ययन, पांडुलिपि विज्ञान तथा उन पर शोध प्रविधियों पर कार्यशाला आजोयित की जा रही है। सांची विश्वविद्यालय का प्रयास है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में जो भी लिखित साहित्य, मानवीय ज्ञान के अभाव में अब तक लिपिबद्ध नहीं किया जा सका है, उसे लिपिबद्ध कर विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। इस तरह से सांची विश्वविद्यालय के प्रयासों से ज्ञान का एक नया श्रोत मानवता के सामने आ सकेगा।

दरअसल भारतीय उपमहाद्वीप के अलावा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों जैसे कंबोडिया, विएतनाम, म्यांमार मलेशिया, इंडोनेशिया में बौद्ध दर्शन से जुड़ी शिक्षाएं एवं उनसे जुड़े पांडुलिपियां, शिलालेख मौजूद हैं जो आज भी ज्ञान के अभाव में पढ़े नहीं जा सके हैं। कार्यशाला में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में मौजूद पांडुलिपियों पर लिखि लिपि को भारत में मौजूद पांडुलिपियों के माध्यम से डीकोड करने के तरीके विकसित करने पर चर्चा की जाएगी। विद्वान ऐसा मान रहे हैं कि इस तरह से एक-दूसरे का ज्ञान साझा कर कई ऐसे सवालों के जवाब हासिल किए जा सकते हैं, जिन्हें अब तक नहीं जाना जा सका है। विश्वविद्यालय के अकादमिक परिसर बारलाए रायसेन में आयोजित की जाने वाली इस सात दिवसीय कार्यशाला में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों से विद्वान एवं शोधार्थी सम्मिलित होंगे।

दैनिक जागरण
4 मार्च, 2017

खोज और प्रमाण की रही है भारतीय चेतना

जागरण सिटी रिपोर्टर। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में प्राचीन लिपियों, लेखन तकनीक, प्रस्तर एवं शिलालेख अध्ययन एवं शोध विधियों पर सात दिवसीय कार्यशाला का शुक्रवार को शुभारंभ हुआ। 9 मार्च तक चलने वाली इस कार्यशाला में भारतीय पांडुलिपि शास्त्र की विशेषताएं लेखन एवं छपाई की तकनीकों, ब्राह्मी लिपि एवं अन्य लिपियों की जानकारी एवं पढ़ने की तकनीकों पर विस्तृत कार्य होगा। उद्घाटन सत्र में कोलकाता विवि में संस्कृत विभाग की प्रमुख रही प्रो. रत्ना बसु ने कहा कि भारतीय चेतना जानने, ढूंढ़ने और

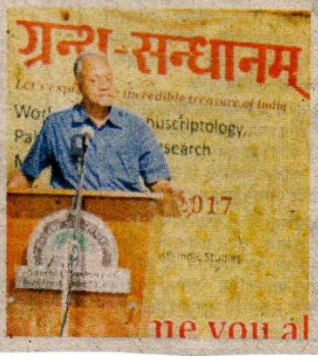

प्रमाण की रही है। उन्होंने पांडुलिपियों की शिक्षा आधारित पर्यटन का सुझाव देते हुए कहा कि आज जरुरत है कि हम नई दृष्टि से अपने ग्रंथों, पांडुलिपियों, शिलालेखों को देखें और उसमें घुसे पश्चिम प्रभाव को हटाकर सत्यरुप का निरुपण करें। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने कहा कि देवनागरी लिपि में ज्ञ अंतिम शब्द है जो ज्ञात को प्रस्तुत करता है अर्थात ज्ञात के उपरांत अनुभूति का पर्याय ही ज्ञान है। इसे देखने और दिखने में विभाजित किया जा सकता है, जिसमें देखना मैं की अभिव्यक्ति है।

जानने, ढूंढ़ने और प्रमाण की रही है भारतीय चेतनाः रत्ना

भास्कर संवाददाता | रायसेन

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में प्राचीन लिपियों, लेखन तकनीक, प्रस्तर एवं शिलालेख अध्ययन एवं शोध विधियों पर सात दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। 9 मार्च तक चलने वाली इस कार्यशाला में भारतीय पांडुलिपि शास्त्र की विशेषता, लेखन एवं छपाई की तकनीक, ब्राह्मी लिपि एवं अन्य लिपियों की जानकारी एवं पढ़ने की तकनीक पर विस्तृत कार्य होगा। उद्घाटन सत्र में कोलकाता विवि में संस्कृत विभाग की प्रमुख रही प्रो. रत्ना बसु ने कहा कि भारतीय चेतना जानने, ढूंढ़ने और प्रमाण की रही है। ग्रंथ संपादन शास्त्र की उपयोगिता बताते हुए उन्होंने कहा कि अब सिद्ध हो चुका है कि भारत में लेखन की जानकारी अफ्रीका से नहीं आई बल्कि पाणिनी और उसके पहले से मौजूद रही है। नवीनतम शोध से सिद्ध हो चुका है कि पाणिनी छठीं शताब्दी ईसा पूर्व हुए थे। उन्होंने पांडुलिपियों की शिक्षा आधारित पर्यटन का सुझाव देते हुए कहा कि आज जरूरत है कि हम नई दृष्टि से ग्रंथों, पांडुलिपियों, शिलालेखों को देखें और उसमें घुसे पश्चिम प्रभाव को हटाकर सत्यरूप का निरूपण करें। सांची बौद्ध विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने कहा कि देवनागरी लिपि में ज्ञ अंतिम शब्द है जो ज्ञात को प्रस्तुत करता है अर्थात ज्ञात के उपरांत अनुभूति का पर्याय ही ज्ञान है। इस मौके पर प्रो. बृजकिशोर, प्रो. निर्मला कुलकर्णी आदि मौजूद थे।

cityभास्कर
BHOPAL, SATURDAY, 04/03/2017 20

सांची विवि में सात दिनी कार्यशाला शुरू

भारतीय चेतना जानने, ढूंढ़ने और प्रमाण की रही है : बसु

EVENT @ SANCHI UNI

सिटी रिपोर्टर • सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में प्राचीन लिपियों, लेखन तकनीक, प्रस्तर एवं शिलालेख अध्ययन और शोध विधियों पर सात दिवसीय कार्यशाला का शुक्रवार को शुभारंभ हुआ। 9 मार्च तक चलने वाली इस कार्यशाला में भारतीय पांडुलिपि शास्त्र की विशेषता, लेखन और छपाई की तकनीकों, ब्राह्मी लिपि व अन्य लिपियों की जानकारी-पढ़ने की तकनीकों पर विस्तृत कार्य होगा। उद्घाटन सत्र में कोलकाता विवि में संस्कृत विभाग की प्रमुख रही प्रो. रत्ना बसु ने कहा कि भारतीय चेतना

• कार्यक्रम में बोलते विशेषज्ञ।

जानने, ढूंढ़ने और प्रमाण की रही है। ग्रंथ संपादन शास्त्र की उपयोगिता बताते हुए उन्होंने कहा कि अब सिद्ध हो चुका है कि भारत में लेखन की जानकारी अफ्रीका से नहीं आई बल्कि पाणिनी और उसके पहले से मौजूद रही है।

दैनिक लोकदेश
भोपाल, शनिवार 4 मार्च 2017

पांडुलिपि शास्त्र, लिपि विज्ञान पर होगी चर्चा

सांची बौद्ध विवि में सात दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

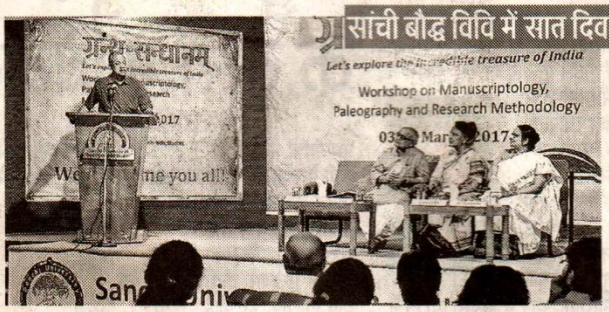

लोकदेश प्रतिनिधि ■ भोपाल

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में प्राचीन लिपियों, लेखन तकनीक, प्रस्तर एवं शिलालेख अध्ययन एवं शोध विधियों पर सात दिवसीय कार्यशाला का आज शुभारंभ हुआ। 9 मार्च तक चलने वाली इस कार्यशाला में भारतीय पांडुलिपि शास्त्र की विशेषता, लेखन एवं छपाई की तकनीकों, ब्राह्मी लिपि एवं अन्य लिपियों की जानकारी एवं पढ़ने की तकनीकों पर विस्तृत कार्य होगा। प्रो. रत्ना बसु ने कहा अब सिद्ध हो चुका है कि भारत में लेखन की जानकारी अफ्रीका से नहीं आई बल्कि पाणिनी और उसके पहले से मौजूद रही है। सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने कहा कि देवनागरी लिपि में ज्ञ अंतिम शब्द है जो ज्ञात को प्रस्तुत करता है अर्थात ज्ञात के उपरांत अनुभूति का पर्याय ही ज्ञान है।

राष्ट्रीय हिन्दी मेल भोपाल, शनिवार, 4 मार्च 2017

पांडुलिपि शास्त्र, लिपि विज्ञान पर कार्यशाला का हुआ शुभारंभ

पश्चिम प्रभाव को हटाकर सत्यरूप को देखने की जरूरत : रत्ना बसु

रायसेन, 3 मार्च। सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में प्राचीन लिपियों, लेखन तकनीक, प्रस्तर एवं शिलालेख अध्ययन एवं शोध विधियों पर सात दिवसीय कार्यशाला का शुक्रवार को शुभारंभ हुआ। 9 मार्च तक चलने वाली इस कार्यशाला में भारतीय पांडुलिपि शास्त्र की विशेषताए लेखन एवं छपाई की तकनीकों, ब्राह्मी लिपि एवं अन्य लिपियों की जानकारी एवं पढ़ने की तकनीकों पर विस्तृत कार्य होगा।

कार्यशाला के शुभारंभ सत्र में कोलकाता विवि में संस्कृत विभाग की प्रमुख रही प्रो रत्ना बसु ने सम्बोधित करते हुए कहा कि भारतीय चेतना जानने, ढूंढने और प्रमाण की रही है। ग्रंथ संपादन शास्त्र की उपयोगिता बताते हुए उन्होने कहा कि अब सिद्ध हो चुका है कि भारत में लेखन की जानकारी अफ्रीका से नहीं आई बल्कि पाणिनी और उसके पहले से मौजूद रही है। उन्होने बताया कि नवीनतम शोध से सिद्ध हो चुका है कि पाणिनी छठवी शताब्दी ईसापूर्व हुए थे। प्रो बसु ने कहा कि भारत में प्राकृतिक साधनों से निर्मित लेखन सामग्री का पूरा विकसित कुटीर उद्योग था।

उन्होने पांडुलिपियों की शिक्षा आधारित पर्यटन का सुझाव देते हुए कहा कि आज जरुरत है कि हम नई दृष्टि से अपने ग्रंथों, पांडुलिपियों, शिलालेखों को देखे और उसमें घुसे पश्चिम प्रभाव को हटाकर सत्यरुप का निरुपण करें। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने कहा कि देवनागरी लिपि में ज्ञ अंतिम शब्द है जो ज्ञात को प्रस्तुत करता है अर्थात ज्ञात के उपरांत अनुभूति का पर्याय ही ज्ञान है। इसे देखने और दिखने में विभाजित किया जा सकता है, जिसमें देखना में की अभिव्यक्ति है और दिखना अनुभव को दर्शाता है। कार्यशाला में जवाहर लाल नेहरु विविए अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विवि वर्धा, हेमवंती नंदन बहुगुणा विवि, गढ़वाल, झारखंड केंद्रीय विवि, जगन्नाथ संस्कृत विवि, पुरी एवं बरकतउल्ला विवि भोपाल के 40 शोधार्थी शामिल हुए।

भोजपाल स्वदेश भोपाल, 4 मार्च 2017 . 3

शुभारंभ | सांची विश्वविद्यालय में पांडुलिपि शास्त्र, लिपि विज्ञान पर कार्यशाला का शुभारंभ

नई दृष्टि से शोध, अध्ययन की आवश्यकता

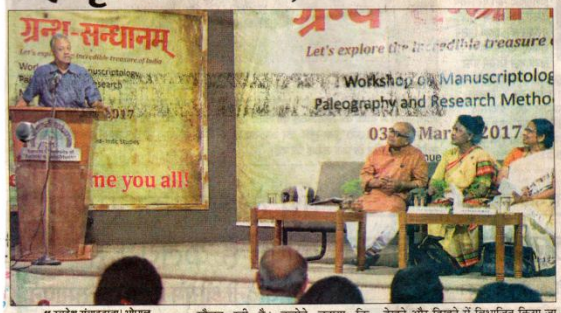

« स्वदेश संवाददाता। भोपाल

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में प्राचीन लिपियों, लेखन तकनीक, प्रस्तर एवं शिलालेख अध्ययन एवं शोध विधियों पर सात दिवसीय कार्यशाला का आज शुभारंभ हुआ। 9 मार्च तक चलने वाली इस कार्यशाला में भारतीय पांडुलिपि शास्त्र की विशेषता, लेखन एवं छपाई की तकनीकों, ब्राह्मी लिपि एवं अन्य लिपियों की जानकारी एवं पढ़ने की तकनीकों पर विस्तृत कार्य होगा।

उद्घाटन सत्र में कोलकाता विवि में संस्कृत विभाग की प्रमुख रही प्रो रत्ना बसु ने कहा कि भारतीय चेतना जानने, ढूंढने और प्रमाण की रही है। ग्रंथ संपादन शास्त्र की उपयोगिता बताते हुए उन्होने कहा कि अब सिद्ध हो चुका है कि भारत में लेखन की जानकारी अफ्रीका से नहीं आई बल्कि पाणिनी और उसके पहले से मौजूद रही है। उन्होने बताया कि नवीनतम शोध से सिद्ध हो चुका है कि पाणिनी छठवी शताब्दी ईसापूर्व हुए थे। प्रो बसु ने कहा कि भारत में प्राकृतिक साधनों से निर्मित लेखन सामग्री का पूरा विकसित कुटीर उद्योग था। उन्होने पांडुलिपियों की शिक्षा आधारित पर्यटन का सुझाव देते हुए कहा कि आज जरुरत है कि हम नई दृष्टि से अपने ग्रंथों, पांडुलिपियों, शिलालेखों को देखे और उसमें घुसे पश्चिम प्रभाव को हटाकर सत्यरुप का निरुपण करें।

रुप, नाम, विचार, शब्द की आवश्यकता

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए सांची विवि के कुलसचिव राजेश गुप्ता ने कहा कि देवनागरी लिपि में ज्ञ अंतिम शब्द है जो ज्ञात को प्रस्तुत करता है अर्थात ज्ञात के उपरांत अनुभूति का पर्याय ही ज्ञान है। इसे देखने और दिखने में विभाजित किया जा सकता है, जिसमें देखना में की अभिव्यक्ति है और दिखना अनुभव को दर्शाता है। उन्होने कहा कि रुप, नाम, विचार, शब्द की आवश्यकता है और शब्द से अर्थ निकलता है, अर्थ से समझ निर्मित होती है और समझ से सत्य की अनुभूति होती है। प्रो गुप्ता ने कहा कि ज्ञान विचार प्रधान है जबकि लोक व्यवहार भाव प्रधान है और शायद इसीलिए लोक व्यवहार के दोहे, लोकोक्तियां, ज्ञान के मंत्र, शास्त्र और काव्य से ज्यादा प्रचलित है।

भारतीय शोध परंपरा प्राचीन

जगन्नाथ संस्कृत विवि, पुरी के प्रो बृजकिशोर स्वाइन ने कहा कि भारतीय शोध परंपरा काफी प्राचीन है एवं इसके उद्घाटन के लिए ग्रंथ प्रकाशन पर सांची विवि को पहल करना चाहिए। उन्होने ग्रंथ संपादन पर कार्यशाला का भी सुझाव दिया। कार्यक्रम की अध्यक्ष और पुणे विवि में संस्कृत विभाग की प्रमुख रही प्रो निर्मला कुलकर्णी ने इस मौके पर पांडुलिपि शास्त्र को स्वतंत्र विज्ञान के रुप में स्थापित करने की आवश्यकता निरुपित की। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य प्रो वैद्यनाथ लाभ ने एवं अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन प्रो नवीन मेहता ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. विश्वबंधु द्वारा किया गया।

सांची विश्वविद्यालय प्रयासरत है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में जो भी लिखित साहित्य, मानवीय ज्ञान के अभाव में अब तक अनुवादित या लिपिबद्ध नहीं हो सकी है, उसे विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया जाए ताकि ज्ञान का एक नया स्त्रोत खुल सके।

ये भी हुए शामिल

कार्यशाला में जवाहर लाल नेहरु विवि, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,सागर, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विवि, वर्धा, हेमवंती नंदन बहुगुणा विवि, गढ़वाल, झारखंड केंद्रीय विवि, जगन्नाथ संस्कृत विवि, पुरी एवं बरकतुल्ला विवि भोपाल के 40 शोधार्थी शामिल है। आमन्त्रित विद्वानों में कोलकाता विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. रत्ना बसु, जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय उड़ीसा से प्रो. ब्रज किशोर स्वाई, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, पूना विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की प्रो. निर्मला कुलकर्णी, गुजरात विश्वविद्यालय की प्रो. सुनंदा शास्त्री एवं वैदिक विद्वान डॉ सुधुम्नाचार्य शामिल है।

TIMES CITY THE TIMES OF INDIA, BHOPAL THURSDAY, MARCH 9, 2017

SANCHI UNIVERSITY TO START FIVE-YEAR COURSE IN MANDARIN LANGUAGE 2

Want to learn Mandarin, come to Sanchi varsity

Ankur Sirothia & Ramendra Singh | TNN

In a first in Central India, there will be a five-year integrated programme in Mandarin (Chinese)

Bhopal: Unlike an apprehension over quality of Chinese products back in India, there is a growing acknowledgement and popularity of 'Mandarin,' the language largely spoken in Dragon land. The Chinese language is so much in demand that Madhya Pradesh government has decided introduce a five-year integrated course in Mandarin at its Sanchi University of Buddhist India-Indic Studies, 40 kilometers from Bhopal, from the next academic session.

In a first in Central India, there will be a five-year integrated programme in Mandarin (Chinese) and the University has received request from over 50 students from different parts to start a full-fledged Chinese course. "On

DEMAND GROWS

the students demand, a decision has been taken to start the five-year integrated programme," said Vijay Dubey, university's assistant director (public relations).

He said a certificate course on Chinese was started last year. "We have 20 students enrolled in the course, including four officials from Indo Tibetan Border Police (ITBP), who have come to do the basic Chinese course due to their border posting.

Introducing the five-year integrated programme in Mandarin is in the interest of students as well as of the university. Officials said for the students, knowing Chinese attracts good job opportunities in China and companies world over, including India.

While for the university, it will help in ancient Indian manuscripts, which had been taken to China and are with them, to be translated in Hindi- a job which can be done by Indian having expertise to read and write Chinese.

Officials said the university has one Chinese faculty as of now. It will recruit professors of Chinese language and will get in guest faculties from China and other places for running the5-year integrated programme in Mandarin.

The students will include both the ones enrolled in ongoing certificate course and the fresh students. Basic admission criteria will be high school. Students will have to appear in the exam conducted by the university.

Assistant professor, Prachi Agarwal told TOI that the decision to start the integrated course in Chinese language was taken after interest shown by a number of students. "Our certificate course is already hit among students", she said, adding that there is a huge demand to learn Hindi in China as well"

Khemraj Sharma, student of university's on going Chinese certificate course said, "There are less educational campuses in the country that have courses in Chinese language. It is good Sanchi University has come up with the plan to introduce a proper PG course. This will not only help students of the country but also from other countries."

The university was established in 2012 and has 17 courses in which 70 students are enrolled.

CITY LIVE
ainment पत्रिका PLUS .18 Bhopal . Friday . 10/03/2017

सांची यूनिवर्सिटी में कार्यशाला संपन्न

भोपाल ● प्राचीन लिपियों, ग्रंथों और उस दौर में प्रचलित लिखने के तरीकों को समझने, पढ़ने के तरीकों और ऐतिहासिक दस्तावेजों के अध्ययन पर आधारित ग्रंथ-संधानम कार्यशाला का समापन सांची विश्वविद्यालय में हुआ। पांडुलिपि शास्त्र और लिपि शास्त्र में रुचि जागृत करने के उद्देश्य से कार्यशाला का भरपूर लाभ छात्रों एवं शोधार्थियों ने लिया। इसमें भारतीय पांडुलिपि शास्त्र की विशेषताएं, लेखन एवं छपाई की तकनीकों, ब्राह्मी लिपि एवं अन्य लिपियों की जानकारी एवं पढ़ने की तकनीकों पर सात दिनों तक अध्ययन, अध्यापन एवं प्रदर्शन किया गया। कार्यशाला के प्रतिभागियों ने सांची स्तूप का भ्रमण कर स्तूप के स्तंभों पर लिखित भाषा को समझा।

city भास्कर
BHOPAL, WEDNESDAY, 22/03/2017

भारतीय भाषा दर्शन में शब्द ही ब्रह्म : प्रो. कपिल

सांची विवि में 'तत्वबिंदु' पर कार्यशाला

सिटी रिपोर्टर • 'भारतीय भाषा दर्शन में शब्द ही ब्रह्म है और यही शब्द भारतीय भाषा दर्शन का बीज है। भारतीय भाषा दर्शन और पाश्चात्य भाषा दर्शन की तुलना करें, तो भारतीय भाषा दर्शन के लिए ग्रंथों का अध्ययन जरूरी है, लेकिन इसके लिए आस्था जरूरी है।'

• प्रो. कपिल कपूर

यह बात महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कपिल कपूर ने कही। वे सांधी बौद्ध विश्वविद्यालय में आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला में विशेष अतिथि के तौर पर शामिल हुए। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान का आधार व्यक्ति की चेतना है और इसके केंद्र में भाषा ही है। कार्यशाला में सम्मिलित होने पहुंचे राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के पूर्व कुलपति प्रो. वी. कुटुंब शास्त्री ने बताया कि वाचस्पति मिश्र को सभी शास्त्रों का ज्ञाता कहा जाता था। उन्होंने 9वीं शताब्दी में मीमासा की टिप्पणी के रूप में तत्त्वबोधिनि को लिखा और इसमें शब्द बोध की पांच अलग-अलग पारंपरिक व्याख्या की थी। वाचस्पति मिश्र ने वैदिक विचार एवं परंपरा की छह अलग-अलग टिप्पणियां भी लिखीं थीं। जिसके कारण उन्हें सभी शास्त्रों का विशेषज्ञ कहा जाता था।

patrika.com
पत्रिका. भोपाल. बुधवार. 22.03.2017

भाषा दर्शन में शब्द ही ब्रह्म है

भोपाल • भारतीय दर्शन की महान विभूति वाचस्पति मिश्र द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत 'तत्तवबिंदु' पर आधारित पांच दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में किया गया। 21 से 25 मार्च तक आयोजित कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे प्रोफेसर कपिल कपूर ने कहा कि भारतीय भाषा दर्शन में शब्द ही ब्रह्म है और यही शब्द भारतीय भाषा दर्शन का बीज है। उन्होंने भारतीय भाषा दर्शन और पाश्चात्य भाषा दर्शन की तुलना कर बताया कि भारतीय भाषा दर्शन के लिए ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक हैए लेकिन ग्रंथों के अध्ययन के लिए आस्था जरूरी है। प्रो. कपिल कपूर ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान का आधार व्यक्ति की चेतना है और इसके केंद्र में भाषा ही है।

दैनिक जागरण
22 मार्च, 2017

सांची विश्वविद्यालय में तत्वबिंदु कार्यशाला

ग्रंथों के अध्ययन के लिए आस्था जरूरी है

• जागरण सिटी रिपोर्टर •

भारतीय दर्शन की महान विभूति वाचस्पति मिश्र द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत 'तत्वबिंदु' पर आधारित पांच दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ सांची बौद्ध भारतीय-ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में किया गया। 21 से 25 मार्च तक आयोजित कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के उप कुलपति रहे प्रोफेसर कपिल कपूर ने कहा कि भारतीय भाषा दर्शन में शब्द ही ब्रह्म है और यही शब्द भारतीय भाषा दर्शन का बीज है। उन्होंने भारतीय भाषा दर्शन और पाश्चात्य भाषा दर्शन की तुलना कर बताया कि भारतीय भाषा दर्शन के लिए ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक है, लेकिन ग्रंथों के अध्ययन के लिए आस्था जरूरी है। प्रो. कपिल कपूर ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान का आधार व्यक्ति की चेतना है और इसके केंद्र में भाषा ही है।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलाधिपति प्रो. कपिल कपूर ने बताया कि वाचस्पति मिश्र द्वारा लिखित तत्वबोधिनि के ब्रह्मकांड के विचार पाश्चात्य दर्शन से मिलते जुलते हैं। उन्होंने कहा कि शब्द, ध्वनि भी है, शक्ति भी है, भाषा भी है, स्वरूप भी है और शब्द, शब्द भी है। शब्द का अपना बोध और चिंतन है। उनका कहना था कि शब्द एक दीपक की तरह है, जिसका अपना रूप और आकृति है। पांच दिन चलने वाली इस तत्वबिंदु कार्यशाला में सम्मिलित होने पहुंचे राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के पूर्व कुलपति प्रो. वी कुटुंब शास्त्री ने बताया कि वाचस्पति मिश्र को सभी शास्त्रों का ज्ञाता कहा जाता था। उन्होंने 9वीं शताब्दी में मीमांसा की टिप्पणी के रूप में तत्वबोधिनी लिखा था और इसमें शब्द बोध की पांच अलग-अलग पारंपरिक व्याख्या की थी। वाचस्पति मिश्र ने वैदिक विचार एवं परंपरा की छह अलग-अलग टिप्पणियां भी लिखी थीं। जिसके कारण उन्हें सभी शास्त्रों का विशेषज्ञ कहा जाता था।